सप्टेंबर २०२१
हर महिने के १०/११ तारीख को शाया (प्रसिद्ध) होता है।

शुमारा हदिया : २५/-

● संपादक
हाजी ए. आय. मुजावर

● कार्यकारी संपादक
प्रो. शाहीन निजामुद्दीन मुल्ला

● मांडणी सजावट
रेहान ग्राफीक्स, सांगली.
९९२३४३७३६७

दिन–दुनिया की मालूमात को कामयाबी की ओर
ले जानेवाला इस्लामी माहनामा (डायजेस्ट)

मुस्तफा

स्व.अ.स

● साल१४ ● शुमारा ९ ● सफर ● हिजरी १४४३

● आईना ●

ध्यान से पढीए

सालाना मुल्य केवल २५०/- रू.
(सालाना विशेषांक के साथ)

● सालाना मेम्बरशीप इधर–उधर
किसी नाम पे मत भेजिए।

मुस्तफा लाईफटाईम मेंबरशीप
४000रू/-

इस बैंक खातेपर कहींसे भी फिस जमा कर सकते है –
* सालाना मेम्बरशीप फिस रू. २५०/-
नैशनलाईज बँक के चेक पर

SBI A/c No.20240440743

IFSC COD : SBIN0008234
Google Pay No. 7841937393

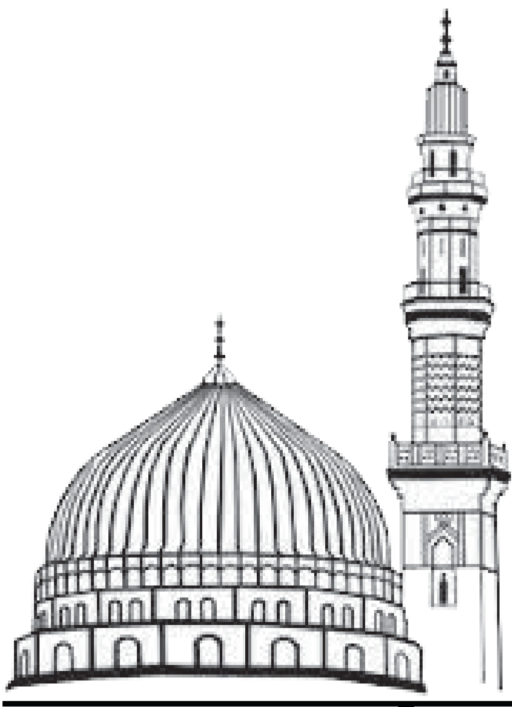
-: खतो – किताबात का पता :-

संपादक
ए. आय. मुजावर, संपादक – मुस्तफा
५७९, सिव्हील हॉस्पिटल रोड, साऊथ शिवाजीनगर, सांगली.

कार्यकारी संपादक
प्रो. शाहीन निजामुद्दीन मुल्ला
५९८, सिव्हील हॉस्पिटल रोड, साऊथ शिवाजीनगर, सांगली.
email : mustafathemagazine@gmail.com , 7841937393

मुस्तफा में छपनेवाली कुरआने करीम की आयतें और अहादीसे नबवी स0 चाहे वह अस्ल हो या तर्जुमा, अपनी दीनी मालुमात में इजाफे के लिए छापी जाती है, इसीलिए उनका एहतराम आपपर फर्ज है। लिहाजा मुस्तफा के अंको और पन्नोंको बेहुरमती से महफूज रखिए।

*अल्लाह ने सारी नेकी–बदी लिख दी और उन्हें बयान भी फरमा दिया। जो आदमी कोई नेक काम करने का इरादा करता है लेकिन कर नही पाता, तो भी अल्लाह पाक अपने करम से पूरी एक नेकी का सवाब अता फरमाता है। और अगर वह नेकी कर गुजरता है तो फिर उसे दस से लेकर ७०० गुना बल्कि इससे भी ज्यादा सवाब लिख देता है। इसी तरह जब कोई आदमी किसी गुनाह के काम करने का इरादा करता है लेकिन कर नही पाता तो अल्लाह पाक उसे गुनाह नही लिखता है और अगर वह गुनाह कर बैठता है तो एक गुनाह लिखता है। *हर सोमवार और जुमेरात को जन्नत के दरवाजे खोले जाते है और हर उस आदमी को बख्श दिया जाता है जो शिर्क नही करता। लेकिन कीना रखने वालों को नही बख्शा जाता । ऐलान होता है–इन्हे मोहलत दो, यहां तक कि आपस में सुलह कर लें। * अल्लाह फरमाता है– तुम लोगों पर खर्च करो, मै तुम्हे दूंगा। अल्लाह का दस्ते कुदरत भरा हुआ है, खर्च करने से कमी नही आती। रात दिन नेमअतें बहाता है। देख लो जब से उसने आसमान व जमीन पैदा फरमाए, नेअमतें बांट ही रहा है, फिर भी उसके खजाने में कोई कमी नही आई।



प्यारे नबी (स्व०) की प्यारी बातें

*कयामत के दिन जब सारे जन्नती जन्नत में, दोजखी दोजख में पहुंच जाएंगे तो अल्लाह पाक फरमाएगा जिसके दिल में राई बराबर ईमान हो वो लोग दोजख से निकाल लिए जाएं। फरिश्ते जब उन्हें दोजख से निकालेंगे तो उनके चेहरे जलकर काले हो चुके होंगे। फिर उन्हें नहरे हयात में डाला जाएगा तो उन पर नई ताजगी आ जाएगी। *मेरे ऊपर झूट बयान करना दूसरों पर झूट बयान करने की तरह नही। जिसने हमारी निस्बत से कोई झूट बात कही (कि अल्लाह के रसूल ने यह फरमाया है) ऐसे आदमी को अपना ठिकाना जहन्नम समझ लेना चाहिए। (अपनी झूठी बात हदीस के हवाले से बयान करने वाला जहन्नमी है।) *जब बात करो तो सच बोलो, वादा करो तो पूरा करो, अमानत में खयानत न करो, शर्मगाहों की हिफाजत करो (जिनाकारी से बचो) निगाहें नीची रखो, हाथों को बुराईयों से रोको, मै तुम्हें जन्नत की गारन्टी देता हूं। *अल्लाह पाक गाफिल और बेहूजूर दिल वाले की दुआ कबूल नही करता (ऐसा आदमी जो दुआ तो मांगे लेकिन उसे पता न हो कि क्या मांग रहा है, उसके दिल को भी खयाल न हो कि दुआ मांग रहा है) * ऐ अल्लाह! तू माफ फरमाने वाला है, माफी को पसन्द फरमाता है, इसलिए तू मुझे भी माफ फरमा दे। आमीन।

संपादकीय

समाज के सुधारने की कोशिशें क्यों बे असर हैं?

कभी कभी हमारे और आपके दिलों में यह सवाल पैदा होता है कि आज हम दुनिया में देख रहे हैं कि इस्लाहे हाल, और समाज सुधार की न जाने कितनी कोशिशें मुख्तलिफ़ जहतों और मुख्तलिफ़ गोशों से हो रही हैं। कितनी अन्जुमनें, कितनी जमाअतें, कितनी पार्टियां, कितने अफ़ाद, कितने जलसे, कितने जुलूस, कितने इज्तिमा होते हैं। और सब का मक़सद बज़ाहिर यह है कि समाज में फैली हुयी बुराइयों का दर्वाज़ा बन्द किया जाये, समाज को सीधे रास्ते पर लाया जाये और इन्सान को इन्सान बनाने की फ़िक्र की जाये। हर एक के अग्राज़ व मक़ासिद में इस्लाहे हाल, समाज को सुधारने, फलाह व बबूद जैसी बड़ी बड़ी बातें दर्ज होती हैं और बड़े बड़े दावे होते है। जो अन्जुमनें और जमाअतें इस काम पर लगी हुयी हैं और जो ऐसे अफराद इस काम में मस्फ़ हैं अगर उनको शुमार किया जाये तो शायद हज़ारों तक उनकी तादाद पहुंचेगी। और हज़ारों जमाअतें, हज़ारतों अफराद इस कम पर लगे हुये है। लेकिन दूसरी तरफ़ अगर समाज की उमूमी हालत को बाजारों में निकल कर देखें, दफ्तरों में जाकर देखें, जीती जागती ज़िन्दगी को ज़रा करीब से देखने का मौका मिले तो महसूस होता है कि वे सारी कोशिशें एक तरफ़ और ख़राबी का सैलाब एक तरफ़, समाज पर इस्लाह का कोई नुमायां असर नज़र नहीं आता, बल्कि ऐसा लगता है कि ज़िन्दगी का पहिया इसी तरह रास्ते पर घूम रहा है, अगर तरक्की हो रही है तो बुराई में हो रही है अच्छाई में नहीं हो रही है। तो ज़ेहन में यह सवाल पैदा होता है कि ये सारी कोशिशें समाज को बदलने में क्यों नाकाम नज़र आती हैं? इक्का दुक्का मिसालें अपनी जगह हैं, लेकिन कुल मिला कर अगर पूरे समाज पर नज़र डाल कर देखा जाये तो कोई बड़ा फ़र्क नज़र नहीं आता। इसकी क्या वजह है?

बीमारी की तश्ख़ीस

इस सवाल का जवाब भी अल्लाह तआला ने इस आयत में अता फ़रमाया है। और हमारी एक बीमारी की तश्ख़ीस भी फरमा दी है। और यह वह आयत है जो अक्सर व ज्यादातर हमारी निगाहों से ओझल रहती है, इसके मायने भी मालूम नहीं हैं। मफ्हूम भी पेशे नज़र नहीं रहता। ''ऐ ईमान वालो! तुम अपने आपकी ख़बर लो, अगर तुम सीधे रास्ते पर आ गये (तुमने हिदायत हासिल कर ली, सही रास्ता इख़्तियार कर लिया) तो जो लोग गुमराह हैं उनकी गुमराही तुम्हें कोई नुक्सान नहीं पहुंचाएगी। तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लौटना है, वहां पर अल्लाह तआला तुम्हें बतायेंगे कि तुम दुनिया के अन्दर क्या करते रहे हो।'' अपने हाल से गाफिल, और दूसरों की

आगे के पेज पर

फिक्र इस आयत में हमारी एक बहुत बुनियादी बीमारी यह बता दी कि ये इस्लाह की कोशिशें जो नाकाम नज़र आती हैं। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि हर शख़्स जब इस्लाह का झन्डा लेकर खड़ा होता है तो उसकी ख्वाहिश यह होती है कि इस्लाह का आग़ाज़ दूसरा शख्स अपने आप से करे, यह खुद दूसरों को बुला रहा है दूसरों को दावत दे रहा है। दूसरों को इस्लाह का पैगाम दे रहा है लेकिन अपने आप से और अपने हालात में तब्दीली लाने से गाफ़िल होता है। आज हम सब अपने गरेबान में मुंह डाल कर देख लें कि मुख्तलिफ़ महफ़िलों और मज्लिसों में हमारा तर्जे अमल यह होता है कि हम समाज की बुराइयों का तज़्किरा मज़े ले लेकर करते हैं सब लोग तो यों कर रहे हैं लोगों का तो यह हाल है समाज तो इस दर्जे ख़राब हो गाया है फ़लां को मैंने देखा वह यों कर रहा था सब से आसान काम इस बिगड़े हुये समाज में यह है कि दूसरों पर इन्सान एतिराज़ कर दे, तन्कीद कर दे, दूसरों के ऐब बयान कर दे, कि लोग तो यों कर रहे हैं, और समाज के अन्दर यह हो रहा है। शायद ही हमारी कोई महफ़िल और कोई मज्लिस इस तजकिरे से खाली होती हो, लेकिन कभी अपने गरेबान में मुंह डाल कर यह देखने की तौफ़ीक़ नहीं होती कि खुद मैं कितना बिगड़ गया हूं, खुद मेरे हालात कितने ख़राब हैं। खुद मेरा तर्जे अमल कितना गलत है, इसकी कितनी इस्लाह की ज़रूरत है, बस दूसरों पर तन्कीद का सिलसिला जारी रहता है, दूसरों के ऐब तलाश करना जारी रहता है। इसका नतीजा यह होता है कि सारी गुफ़्तगू बात का मज़ा लेने के लिये, मज्लिस जमाने के लिये, मज़ा लेने के लिये होकर रह जाती है। इसके नतीजे में इस्लाह (सुधार) की तरफ़ कोई कदम नहीं बढ़ता।

****

मौत का आना जितना यक़ीनी है आदमी उससे उतना ही ग़ाफ़िल है याद रखिए रोज़ाना मलकुल-मौत अपने शिकार को देखता रहता है।

इब्ने अनी हातिम में है कि एक अंसारी के सरहाने मलकुल-मौत को देखकर रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, मलकुल-मौत! मेरे सहाबी के साथ आसानी कीजिए। मलकुल-मौत ने जवाब दिया कि अल्लाह के नबी (सल्ल०)! तस्कीन ख़ातिर रखिए और दिल खुश कीजिए। वल्लाह मैं खुद बा-ईमान के साथ निहायत नर्मी करनेवाला हूँ। सुनो या रसूलल्लाह! क़सम है खुदा तआला की! तमाम दुनिया के हर कच्चे-पक्के घर में, चाहे वह खुश्की में हो या तरी में, हर दिन में मेरे पाँच फेरे होते हैं। हर छोटे-बड़े को मैं उससे भी ज़्यादा जानता हूँ जितना वह ख़ुद अपने आपको जानता है। या रसूले खुदा! यकीन मानिए कि मैं तो एक मच्छर की जान क़ब्ज़ करने की भी कुदरत नहीं रखता जब तक कि मुझे ख़ुदा तआला का हुक्म न हो जाए। हज़रत जाफ़र रह० का बयान है कि मलकुल-मौत अलैहिस्सलाम का दिन में पाँच वक़्त एक-एक शख्स की ढूंढ-भाल करना है कि आप अलै० पाँच नमाज़ों के वक़्त देख लिया करते हैं, अगर वह नमाज़ों की हिफ़ाज़त करनेवाला है तो फ़रिश्ते उसके क़रीब रहते हैं और शैतान उससे दूर रहता है और उसके आखिरी वक़्त फ़रिश्ता उसे 'ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' की तल्क़ीन करता है। मुजाहिद रह० फ़रमाते हैं कि हर दिन हर घर पर मलकुल-मौत दो मर्तबा आते हैं। कब अहबार रज़ि० उसके साथ ही यह भी फ़रमाते हैं कि हर दरवाज़े पर ठहर कर दिन भर में सात दफ़ा नज़र मारते हैं कि उसमें कोई वह तो नहीं जिसकी रूह निकलने का हुक्म हो चुका हो।



(तफ़सीर इब्ने कसीर, जिल्द ४, पे० २०४)

तशरीई और तकवीनी

एहकाम दो तरह के हैं एक तकवीनी और दूसरा तशरीई, तकवीनी एहकाम अदना हैं, तशरीई एहकाम अअला हैं, तकवीनी यह हैं कि कहीं जंग हो जाए, कहीं बारिश हो जाए, कहीं सर्दी और गर्मी आजाए, कहीं तूफ़ान आजाए, यह अल्लाह की तरफ से एहकाम उतर रहे हैं, आमाल के हिसाब से एहकाम उतरते हैं। उन्हें तकवीनी एहकाम कहा जाता है, जिस पर ख़िज़र अलैहिस्सलाम को मअमूर किया गया है और जिन्न व इन्स में से भी उसके लिए मुन्तख़ब किये जाते हैं फ़रिश्तों को भी मुन्तख़ब किया जाता है। तशरीई एहकाम, उनको नबी ले कर आता है, यह अफ़ज़ल हैं, वह अदना हैं, फिर उन एहकाम की दो किस्में हैं: एक नबी की जात से मुतअल्लिक और एक उम्मत से मुतअल्लिक, और कुछ एहकामात ऐसे होते हैं जो नबी और उम्मत दोनों से मुतअल्लिक हैं, जो अवामिर नबी से मुतअल्लिक हैं वह अफ़ज़ल हैं उम्मत के अवामिर से, फिर नबी के मर्तबे के ऐतबार से, फिर सवा लाख नबियों से मुतअल्लिक अवामिर हैं उनसे हमारे हुजूर के मुतअल्लिक जो अवामिर हैं वह अफ़ज़ल हैं, उन में कोई चीज़ अदना नहीं होती, यह सिर्फ निसबत के एतबार से है और यह तरतीब है कि अदना को अअला पर कुरबान किया जाता है, अअला को अदना पर कुरबान नहीं किया जाता, नबातात हैवानात पर कुरबान होते हैं, हैवानात इन्सान पर कुरबान होते हैं, यह भी किसी पर कुरबान हो? यह ऐसा ही मर कर कीड़ों की खुराक बनेगा यह अपने से अअला अल्लाह की ज़ात पर कुरबान हो, फिर ऐसे अअला अवामिर के लिए अदना अवामिर कुरबान होते हैं, फिर उससे जो अदना है वह अपने से अअला पर कुरबान होगा कुरआन की तिलावत, नमाज़ पर कुरबान होगी, भाई! नमाज़ का वक़्त है कुरआन बन्द कर दो, जब नमाज़ पढ़ोगे कुरआन की तिलावत में जो कमी है वह पूरी हो जाएगी कुरआन पढ़ोगे जमाअत छूट जाएगी और कुरआन की तिलावत से यह कमी पूरी नहीं होगी इल्म का तकरार जिहाद है तकरार हो रहा हो जमाअत खड़ी हो गई अरे भाई नमाज़ पढ़ो, कहता है कि हमें इल्म से रोकते हो नहीं भाई नमाज़ पढ़ लो तो इससे इल्म की कमी पूरी होगी इल्म से नमाज़ की कमी पूरी नहीं होगी इसी तरह ज़िक्र कर रहा है, नमाज़ खड़ी हो गई तो ज़िक्र को छोड़ना पड़ेगा, क्योंकि नमाज़ अअला है, अदना को अअला पर कुरबान किया अब मेरे भाईयो, अल्लाह की तरफ़ बुलाना यह वह अमल है जो सबसे अफ़ज़ल है और सबसे अअला है यह काम सिर्फ नबियों को दिया गया और किसी को नहीं दिया गया । यह दावत अल्लाह की है यही अमल तमाम नबियों को दिया गया है और यह सबसे अफ़ज़ल है और सबसे अअला है। अगर यह अमल न हो तो नमाज़ कायम नहीं होगी यह अमल न हो तो रोज़ा वजूद में नहीं आएगा, यह अमल न हो तो ज़कात और हज वजूद में नहीं आ सकते, दावत सबसे पहली बुनियाद है जिस पर सारा दीन खड़ा है, दावत नहीं है तो कोई भी चीज़ वजूद में नहीं आ सकती, कोई नक्शा वजूद में नहीं आ सकता और अल्लाह ने फ़ज़्ल और करम फ़रमाया कि इस काम को हुजूर अकरम के वास्ते से पूरी उम्मत को दे दिया ऐ! उम्मते मोहम्मदी खड़ी होजा, अल्लाह के कलिमे को दुनिया में बुलन्द कर और बाला कर।

यह ख़त्मे नुबुव्वत की वजह से हमारे ज़िम्मे है, ख़त्मे नुबुव्वत का हुक्म सारे हुक्मों पर छाया हुआ है, दावत का सफ़र था आप ने खुद रोजा अफतार किया, फर्ज रोज़ा छोड़ दिया, रमजान के महीने में दावत के सफर में रोज़ा अफतार हुआ, नमाज़ चार रकअत थी, दो रकअत हो गई, दावत के सफर में हुआ, फिर दो रकअत सलातुल खौफ उतरी, अजीब हैय्यित है आ भी रहे हैं जा भी रहें हैं, नमाज़ भी पढ़ रहे हैं, फुकहा कहते हैं

यूँ सीना फिर जाए तो नमाज़ टूट जाती है, और सलातुल खौफ सीना ही नहीं पूरे के पूरे आदमी जा भी रहे हैं आ भी रहे हैं, नमाज़ भी हो रही है, आना भी नमाज़ जाना भी नमाज़, नमाज़ की शकल बदल गई, नमाज़ की रकअत में तबदीली आई दावत के सफ़र मे। उस को सबसे ऊँचा रखा, यह माँ है, इससे अअमाल ज़िन्दा होते हैं, अगर दावत की मेहनत नहीं होगी तो दीन ज़िन्दा नहीं हो सकता, इसलिए नबी सबसे पहले दायी बनके आते हैं, दायी इलल्लाह, सिराज, मुनीर यह हुज़ूर अकरम स्व० की सिफात बयान की जा रही हैं।

तबलीग का काम ख़त्मे नुबुव्वत की अमली शकल है

ख़त्मे नुबुव्वत की वजह से हमारे ज़िम्मे क्या काम लगा, रिसालत की वजह से हमारे ज़िम्मे क्या काम लगाया अल्लाह ने, दीन को फैलाना हमारे ज़िम्मे लग चुका है, अब आप यूँ कहें कि हम अपने मौहल्ले की मस्जिद में गश्त करते हैं, यह थोड़ा है कि बाहर के मुल्कों में जाएं, अपनी मस्जिद की तअलीम और गश्त होता है, नमाज़ की बात भी होती है, किसी ने कहा कि जी मैं डाक्टर हूँ मेरी डाक्टरी तबलीग है, अगर यूँ कहते हैं कि हम अपने इलाके में दीन की खिदमत कर रहे हैं तो हम पूरी दुनिया में फिरना ज़रूरी नहीं समझते तो यह हुजूर अकरम के आलमी नबी होने पर जर्ब लगती है अगर हम दुनिया के इन्सानों तक कलिमे को पहुँचाना काम नहीं समझते तो आप बताओ कौन पहुँचाएगा? अगर मैं अपना जिम्मा नहीं समझता तो मैं खत्मे नुबुव्वत के अकीदे पर हथौड़ा मार रहा हूँ मैं ने बीवी बच्चों का हक अदा किया है, माँ बाप का हक अदा किया है लेकिन ख़त्मे नुबुव्वत का हक मारा है, माँ का हक मारें तो अल्लाह नाराज़ होते हैं बीवी बच्चों का हक मारें तो अल्लाह नाराज़ नहीं होंगे माँ का हक मुकद्दम नहीं है हुजूर अकरम के हक से, बेशक माँ का हक बहुत है, बाप का हक बहुत है, बीवी बच्चों का हक बहुत है लेकिन हुज़ूर अकरम (स्व०) से बढ़कर नहीं

अल्लाह कहता है ''मेरे हबीब का तुम पर तुम्हारे जानों से ज़्यादा हक है'' अगर मेरी जान है तो मेरे ज़िम्मे माँ का हक है अगर मैं बीमार हो जाऊँ तो मेरे जिम्मे माँ का कोई हक नहीं, वह कहेगी पहले तू अपना इलाज कर, जान बचाना फर्ज है।

जान बचाना फर्ज है

हाजी अब्दुल वहाब साहब अस्पताल में दाखिल हुऐ दिल की तकलीफ़ की वजह से डाक्टरों ने मना किया हुआ था कि बोलना नहीं, और वह बोलते रहते, डाक्टरों ने कहा कि यह तो चुप ही नहीं होते, तो मुफ्ती साहब तशरीफ़ लाए तो उन्होने सलाम किया हाजी अब्दुल वहाब साहब ने कहा वअलैकुम अस्सलाम मुफ्ती साहब ने कहा कि तुमने मुझे वअलैकुम अस्सलाम क्यों कहा? जबकि आप को खामोशी से जवाब देना चाहिए यह मुफ्ती कह रहे हैं, सलाम करना सुन्नत और जवाब देना वाजिब है, यह वाजिब छुड़वा रहे हैं कि तुमने मुझ को जवाब क्यों दिया, जबकि डाक्टरों ने कहा कि खामोश रहो, जान बचाना फर्ज है जान बचेगी तो दूसरों के हकूक अदा होंगे और अल्लाह तआला फरमा रहे हैं कि नबी का हक तेरी जान से ज़्यादा है।

काएनात का सबसे बड़ा मोहसिन कौन?

मेरे भाईयों! हम अपने माँ बाप के ज़रिये से दुनिया में आए और उसके बगैर भी आ सकते थे, हमारे बच्चे हमारे ज़रिये से दुनिया में आए हमारे बगैर भी आ सकते थे, लेकिन हुज़ूर अकरम (स्व०) के बगैर यह सारा नक्शा वजूद में नहीं आ सकता था तो उनका हक हमारे हक से बड़ा है, खत्मे नुबुव्वत की लाईन के एहकाम सारे एहकाम पर छाए हुए हैं आप नमाज़ पढ़ रहे हैं और साँप निकल आए तो आप को नमाज़ छोड़ कर साँप को मारना पड़ेगा, ज़रूरी नहीं कि साँप जहरीला हो, और ज़रूरी नहीं कि साँप काटे और यह मर जाए, नहीं अब उस का नमाज़ तोड़ना वाजिब हो चुका है, नमाज़ तोड़े और उसको मारे, यह मूअज़ी है फिर नमाज़ शुरू करो, दूसरी तरफ देखिये आप मैदान में निकले हैं, कुफ्फार को दावत दे रहे हैं वह कहते हैं हम नहीं पढ़ते, तीन दिन दावत देते रहे, अच्छा इस्लाम कुबूल नहीं करते तो जज़्या दो, उन्होंने कहा हम जज़्या भी नहीं देते, अच्छा जज़्या भी नहीं देते तो हमारे साथ कत्ताल करो कत्ताल

शुरू हुआ और मुसलमानों के कदम उखड़ गए मिसाल दे रहा हूँ हार हो गई पाँच दस आदमी रह गए बाकी भाग गए और अब सामने मौत है खुली हुई मौत है तीरों की बोछाड़ है तलवारों का मैंह बरस रहा है खड़े हो जाएं तो मर जाते हैं उनको भी उस वक्त यह हुक्म नहीं है कि वापस चले जाएं बल्कि उसी हालत में मर जाएं भाग नहीं सकते अगर वापस गए तो गुनाह कबीरा होगा और फ़ासिक होकर जाओगे, पीछे भागते हुए अगर तीर लग गया और मर गए तो हराम मौत मर गए, सिर्फ एक सूरत में वापस आने की इजाजत है कि दोबारा हमला करने का इरादा हो तो वापस जाओ और दूसरी तरफ से हमला करो लेकिन बसूरते दीगर जान देदो वापस नहीं जा सकते, नमाज़ को तोड़ दो साँप को मारो फिर नमाज़ शुरू करो, लेकिन दावत के अंदर कत्ताल आ जाए तो वापस नहीं आ सकते, मरो, यह ख़त्मे नुबुव्वत की लाइन का हुक्म है इस पर जान की कुरबानी अल्लाह ने माँगी है एक है हकूक का ज़ाए करना एक है हकूक का कुरबान करना दोनों में फर्क है, नफ्सानियत की वजह से हकूक अदा नहीं करता तो यह हकूक जाए करना है और एक आदमी अल्लाह के कलिमे को फैलाने के लिए माँ बाप के हकूक छोडता तो शकल बन गई कि हक जाए हो गया कमाई में नुकसान आ गया, कारोबार में घाटा पड़ गया।

नबी (स्व०) के काम के लिए कुरबानी देने वाले एक शख्स का वाकिआ

एक साथी रूस की जमाअत में गया, पीछे उस को १६ लाख का नुक्सान हुआ जब वह वापस आए तो उस के सारे रिश्तेदारों ने उस का जीना हराम कर दिया, तबलीग करता रह और भी कर सारा घर लुटा दिया, इसी का नाम इस्लाम है कि अपने बच्चे दर–दर भीक माँगते रहें, वह नीम पागल हो गया, एक दफ़अ हम गश्त कर रहे थे बाजार में सोकड़ मंडी में, तो वहाँ वह भी बैठा हुआ था और जो मंडी का ताजिर था वह कहने लगा कि मौलवी साहब यह कोई तबलीग है इस बेचारे का सारा घर लुट गया १६ लाख का नुक्सान हुआ मैं ने उससे कहा तुझे मुबारक हो! वह हैरान हो गए, उन्होंने कहा मौलवी यह क्या कह रहे हो, मैंने कहा! बात तो यह है कि यह नुक्सान उस के मुकद्दर में था नबी का फरमान है 'जो तकलीफ़ आने वाली है उसे कोई हटा नहीं सकता जो राहत आने वाली है उस को कोई नहीं रोक सकता', यह तकलीफ आनी थी कारोबार में घाटा आना था, तुम्हारी इस मंडी में रोज़ाना घाटे पड़ते हैं लाखों के घाटे पड़ते हैं तुमने कभी शोर मचाया तुमने कभी कहा कि उसके बच्चे भूके मर रहे हैं, सूदी कारोबार करते–करते जब वक़्त आता है दीवालिये निकल जाते हैं, यह तबलीग में गया था उस का नुक्सान हुआ इसलिए शोर मचा रहे हैं उसका नुक्सान होना था लेकिन यह मुबारक शख्स है कि उस का नुक्सान सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु के नुक्सान से मशाबह हो गया।

कारोबार भी और दीन भी अअला पैमाने पर चलता रहे यह नहीं हो सकता

अबू तलहा अन्सारी बागात का मालिक, एक दिन घर में आए तो तमाम बाग उजड़े हुए हैं और घर में एक आदमी के लिए भी रोटी नहीं, अन्सार मदीना थे और पेट पर पत्थर बाँधे हुए हैं, यह उनका आलम है उनके बागात क्यों लुट गए? वह घाटे क्यों पड़े, नबी की ख़त्मे नुबुव्वत की मेहनत की वजह से घाटे आए, ख़त्मे नुबुव्वत के काम की वजह से नुक्सान आया, अगर खत्मे नुबुव्वत की मेहनत और दीन के काम का मिज़ाज यह होता कि अपने कारोबार को भी ठीक रखो और अपने घर के काम से फारिग हो जाओ तो दीन का काम भी करो, अगर दीन का मिज़ाज यह होता ख़त्मे नुबुव्वत का मिज़ाज यह होता पहले बीवी बच्चों को रोटी खिलालो फिर तबलीग कर लो, तो फिर किसी सहाबी को पेट पर पत्थर बाँधने की ज़रूरत नहीं पड़ती, हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को सात दिन के फाके का कोई दुख नहीं तो हज़रत हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का भूक की वजह से तड़प–तड़प के रोना कोई समझ में नहीं आता यह बागात उजड़ गए घर के घर वीरान होगए यह क्यों हुआ? हालाँकि उनको अअला और अदना की तमीज़ थी, हमें तमीज़ नहीं है, वह अदना को अअला

पर कुरबान करते थे हम कुरबान नहीं कर रहे हैं यह ख़त्मे नुबुव्वत की लाईन का सबसे अअला दर्जे का काम है, जद पड़ गई नुक्सान आगया, घाटा आ गया, फर्ज करो पहली बात तो यह बहुत लोग हैं जिन के साथ यह होता है, और जिन के साथ यह होता है वह बड़े मुकर्रब लोग हैं, सबसे ज़्यादा मुशक़्क़त में अंबिया होते हैं, और नुक्सान और घाटे बिला जरूरत नहीं हैं उस पर इतना मिलेगा इतना मिलेगा कि उस की और नबी की जन्नत के दरमियान सिर्फ एक दर्जे का फ़र्क होगा। ***

अल्पसंख्यक समुदायों से संबंधित छात्रों के लिए मैरिट-सह-साधन आधारित छात्रवृत्ति की योजना

१.उद्देश्य :इस योजना का उद्देश्य अल्पसंख्यक समुदायों से सम्बद्ध गरीब और मेधावी छात्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है ताकि वे व्यावसायिक और तकनीकी पाठ्यक्रमों की पढ़ाई कर सके।

२.कार्यक्षेत्र : यह छात्रवृत्तियां केवल भारत में ही अध्ययन के लिए उपलब्ध हैं और इन्हें राज्य सरकार/संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन अथवा राज्य सरकार/संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन द्वारा इस उद्देश्य के लिए पदनामित की गई एजेंसी के माध्यम से प्रदान की जाएंगी।

३.छात्रवृत्ति की संख्या :१२वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान, देशभर में राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में अल्पसंख्यक समुदायों के विद्यार्थियों के बीच राज्य/संघ राज्य क्षेत्र–वार इन समुदायों की आबादी के आधार पर नवीकरण के अलावा प्रत्येक वित्त वर्ष में ६०,००० नई छात्रवृत्तियां प्रदान की जाएंगी। २००१ की जनगणना के आधार पर नई छात्रवृत्तियों का विवरण निम्नानुसार है:

४.छात्रवृत्ति के लिए शर्ते :वित्तीय सहायता, किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से डिग्री और/अथवा स्नातकोत्तर स्तर के तकनीकी एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम जारी रखने के लिए दी जाएगी। पाठ्यक्रम शुल्क एवं अनुरक्षण भत्ता चयनित छात्रों के खाते में जमा कराया जाएगा/ सीधे ही अंतरिक किया जाएगा।

वे छात्र, जो प्रतियोगी परीक्षा के आधार पर किसी कालेज में तकनीकी/व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में दाखिला प्राप्त करते है, वे इस छात्रवृत्ति के लिए पात्र होंगे। तथापि, ऐसे छात्रों के उच्चतर माध्यमिक/ स्नात्तक स्तर पर ५० प्रतिशत से कम अंक नहीं होने चाहिए। ऐसे छात्रों का चयन पूर्णतया मैरिट आधार पर किया जाएगा। आगामी वर्षों में छात्रवृत्ति को जारी रखना, पिछले वर्ष के दौरान पाठ्यक्रम के सफलतापूर्वक पूरा होने पर निर्भर करेगा। इस योजना के अंतर्गत कोई छात्रवृत्ति धारक, पाठ्यक्रम को जारी रखने के लिए कोई अन्य छात्रवृत्ति/वृत्तिका प्राप्त नहीं करेगा।लाभग्राही/लाभग्राही के माता–पिता या लाभग्राही के अभिभावक की सभी स्त्रोतों से वार्षिक आय २.५० लाख रु. से अधिक नहीं होनी चाहिए। आय प्रमाण–पत्र एक वर्ष के लिए वैध होगा। राज्य विभाग प्रत्येक वर्ष इस योजना को विज्ञापित करेगा और सम्बद्ध संस्थानों के माध्यम से समय–सीमा के अनुसार आवेदन आनलाइन प्राप्त करेगा। छात्रवृत्ति भुगतान के लिए आधार नंबर भी आवश्यक है। विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए गए आवेदनों पर कार्रवाई करने और विश्र्लेषण करने तथा समय–सीमा के अनुसार छात्रवृत्ति स्वीकृति के लिए पात्र विद्यार्थियों का प्रस्ताव इस मंत्रालय में आनलाइन भेजने के लिए संबंधित राज्य सरकार/संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन उत्तरदायी होगी। निधियां जारी करने के लिए राज्य विभाग से आनलाइन प्रस्ताव इस मंत्रालय द्वारा प्रति वर्ष निर्धारित समय–सीमा के अनुसार मंत्रालय में अग्रेषित करना चाहिए तथा प्राप्त होना चाहिए। अगामी वर्ष में छात्रवृत्ति वितरण के लिए निधि, पिछले वर्ष के लिए उपयोगिता प्रमाणपत्र प्राप्त होने के बाद जारी की जाएगी। मंत्रालय के अधिकारियों या मंत्रालय द्वारा पदनामित किन्हीं अन्य एजेंसियों द्वारा वार्षिक निरीक्षण भी किया जाएगा।

५.निर्धारण : किसी एक राज्य में प्रत्येक अल्पसंख्यक समुदाय में ३० प्रतिशत छात्रवृत्तियां लड़कियों के लिए आरक्षित की जाएंगी, जो कि सम्बद्ध राज्य में उस समुदाय में किसी महिला उम्मीदवार के उपलब्ध न होने पर उसी समुदाय के किसी लड़के को अंतरित की जा सकती है। यदि

पान नं २५ पे जारी

साइंस की तहकीक

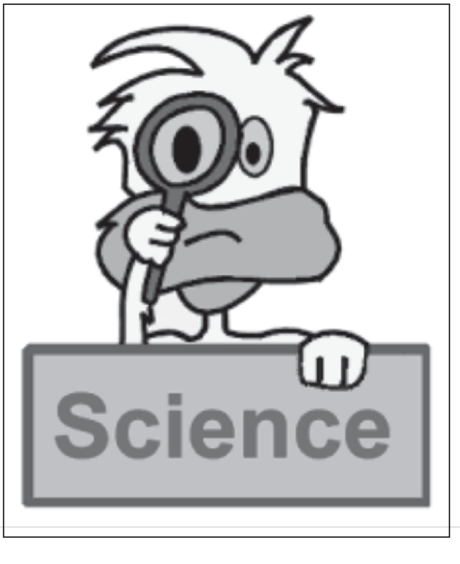
साइंस कहती है कि 'इन्सान के पाँच हवास हैं। उलमा के नज़दीक छह हवास हैं। पाँच तो वे जो साइंस भी मानती है:

१.बासिरा .... देखने की कुव्वत।
२.सामिआ ....सुनने की कुव्वत।
३.शाम्मा .... सूंघने की कुव्वत।
४.ज़ायका .... चखने की कुव्वत।
५.लामिसा .... महसूस करने और छूने की कुव्वत।

यह तो साइंस भी कहती है। एक और 'हिस्स' (महसूस करने वाली कुव्वत) है जिसको कहते हैं:
६. अक्ल व बसीरत (यानी समझ–बूझ और दूर–अंदेशी)

अक्ल और मारिफ़त बड़ी नेमत

साइंस इसे नहीं मानती। हम इसे मानते हैं। छठी हिस्स सबसे आला है। इसलिए कि पाँच हवास में तो जानवर भी शामिल है, इसान की जो एक अलग पहचान और ख़ास हैसियत है वह छठी हिस्स की वजह से है। हर हिस्स की अपनी लज़्ज़ते हैं, लुत्फ और मजे की बात है। अक्ल व बसीरत से मारिफ़त मिलती है और मारिफत की लज़्ज़तें सबसे ज़्यादा होती है। मिसालः एक बहुत खूबूरत फूल एक आदमी देखता है तो वह अपनी बीनाई (आँखों की रोशनी) के बक़्द्र उससे लुत्फ़ उठायेगा। जिसकी बीनाई ठीक है वह तो उसके ज़ाहिर को देखकर खुश होगा और जिसकी बीनाई ठीक नहीं, जिसके पाँच नम्बर का चश्मा लगा हुआ है और चश्मा भी उसके पास न हो तो उसको तो फूल पूरी तरह नज़र भी नहीं आएगा। फूल की खूबसूरती वही है, जो उसके हुस्न को बारीकी से देख रहा है वह लज़्ज़त पा रहा है, और जिसके सामने उसके हुस्न की हक़ीक़त नहीं खुली वह आदमी लुत्फ़–अन्दोज़ होने से मेहरूम है। तो मारिफ़त (अल्लाह की पहचान) की लज़्ज़त सब लज़्ज़तों से आला है, लिहाज़ा जिस इन्सान को अल्लाह तआला की मारिफ़त नसीब हो जाये उसको वे लज़्ज़तें मिलती हैं जो लज़्ज़तें किसी और तरीके से मिलनी मुम्किन ही नहीं होतीं। जब अल्लाह तआला की मारिफ़त सबसे बड़ी नेमत है तो उससे मेहरूमी फिर सबसे बड़ा अज़ाब हुआ।



दुख देने वाला अज़ाब

इसी लिए सबसे बड़ी सज़ा अल्लाह तआला कियामत के दिन नाफ़रमानों को अपने दीदार से मेहरूम फ़रमाकर देंगे। यह जहन्नम में भेजने से भी बड़ी सज़ा है। अल्लाह तआला हम–कलामी (यानी उनके साथ बातचीत करने) से भी मेहरूम फरमा देंगे। अल्लाह तआला का इरशाद है: 'पड़े रहो फटकारे हुए। दफ़ा हो जाओ दूर हो जाओ। ख़बरदार! मुझसे गुफ़्तगू मत करो।' उसके बाद बन्दा अल्लाह तआला से बातचीत नहीं कर सकेगा। कुरआन पाक में इरशाद फ़रमायाः 'अल्लाह तआला उनसे बातचीत भी नहीं फ़रमाएगा।'

तो अल्लाह तआला का हम–कलामी (यानी गुफ़्तगू करने) से इनकार फ़रमा देना और किसी शख़्स को अपने दीदार से मेहरूम कर देना यह सबसे बड़ी सज़ा है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के घर तशरीफ़ लाये। हज़रत हफ़्सा

रज़ियल्लाहु तआला अन्हा घर पर ही थी। आपने वह रात वहीं बसर की। उम्मुल-मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बिस्तर पर आराम कर रहे थे। मुझे अपने चेहरे के ऊपर कोई गरम चीज़ पड़ती नज़र आई। मैंने हाथ लगाया तो उठ बैठी। मैंने देखा कि अल्लाह के महबूब की मुबारक आँखों से आँसू टपक रहे थे। मेरे रुख्सार पर पड़ रहे थे। मैंने पूछा ऐ अल्लाह के महबूब! ''आप क्यों रो रहे हैं?'' नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया हफ़्सा! सुन नहीं रही हो तुम्हारा भाई इब्ने उमर तहज्जुद में कुरआन पढ़ रहा है और अभी उसने यह आयत पढ़ी है:

'यानी हरगिज़ (ऐसा) नहीं! ये लोग उस दिन अपने रब का दीदार करने से रोक दिये जायेंगे।' हफ्सा मुझे इस आयत ने रुला दिया। तो अल्लाह तआला का किसी बन्दे को अपने दीदार से मेहरूम कर देना यह सब अज़ाबों से बडा अज़ाब है। और अल्लाह तआला का किसी को अपना दीदार करवा देना यह सब इनामात से बड़ा इनाम है।

जन्नत वालों के लिये इनाम

हदीस पाक में आता है कि जन्नती लोगों को बड़ा इनाम यह मिलेगाः 'जन्नती लोग अल्लाह तआला के दरबार में दिन में दो बार पेश होंगे और परवर्दिगार उन जन्नतियों को खुद कुरआन सुनायेंगे।'

वह मजलिस कैसी होगी, उसके लुत्फ़ और मज़े कैसे होंगे। आज कोई अच्छे कारी कुरआन की तिलावत करते हैं तो इनसान के रूंगटे खड़े हो जाते हैं। दिल पर अजीब सी कैफियत हो जाती है। जब अल्लाह तआला अपना कलाम खुद सुनायेंगे और ईमान वाले सुनने वाले होंगे तो सोचिए कि लज़्ज़त का क्या आलम होगा। इसलिए कुछ लोग कियामत के दिन कब्रों से इस हाल में उठेंगे कि अल्लाह तआला का दीदार उनको नसीब होगा। टकटकी लगाकर अपने मालिक का दीदार करने लग जायेंगे। उनको कोई डर और ख़ौफ़ नहीं होगा। तो जन्नत में सबसे बड़ी नेमत, लज़्ज़त वाली चीज़ अल्लाह तआला का दीदार नसीब होना है। इसलिए इरशाद फ़रमायाः

' परहेज़गार और नेक लोग बागों और नहरों में होंगे। एक उम्दा ठिकाने में, कुदरत वाले बादशाह के पास।'

आज दुनिया के बादशाह किसी जगह जायें तो महफ़िल सजाई जाती है। जब अल्लाह तआला जलवा-अफ़रोज़ होंगे तो महफ़िल कैसी सजी होगी। इसलिए अल्लाह तआला की नज़दीकी और उसके दीदार की लज़्ज़त पाने की दुआ खूब ज़्यादा करनी चाहिए। हज़रत राबिया बसरिया को किसी ने दुआ दी कि अल्लाह तआला तुझे जन्नत अता फ़रमा दे। उन्होंने जवाब में फ़रमाया ''अल्जारु सुम्मदारु'' कि घर की दुआ बाद में करना पहले पड़ोसी की बात करो कि मेरा पड़ोसी कौन बनेगा? इसलिए कुरआन मजीद में फ़रमायाः 'अल्लाह की रिज़ा (प्रसन्नता) सबसे बड़ी चीज़ है चुनाँचे अल्लाह तआला का राज़ी हो जाना मोमिन के लिए सबसे बड़ी खुशी है।'

चन्द खुशी के आँसू

इनसान को जब कोई बड़ी खुशी मिलती है तो खुशी से आँसू निकल आते हैं। एक होता है गम का रोना, एक होता है खुशी का रोना। किसी आरिफ़ (अल्लाह वाले) ने एक पत्थर को देखा कि रो रहा था। पूछा कि क्यों रोते हो? कहने लगा रोता इसलिए हूँ कि कहीं जहन्नम का ईंधन न बना दिया जाऊँ। उन्होंने दुआ कर दी कि ऐ अल्लाह! इस पत्थर को आप जहन्नम का ईंधन न बनाइयेगा। दुआ कबूल हो गई। उन बुजुर्ग ने उसे खुशख़बरी सुना दी और चले गये। जब वापस आये तो देखा कि फिर रो रहा है। पूछा अब क्यों रो रहे हो? उसने कहा कि हज़रत पहला रोना वह ख़ौफ़ का रोना था और अब यह खुशी का रोना है अब दूसरी वजह से रो रहा हूँ कि मेरा मालिक राजी हो गया, अब मुझे जहन्नम में नहीं डालेगा। यह खुशी का रोना है। तो खुशी में भी आँसू निकल आते हैं।

हज़रत उबई बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे हैं। नबी अलैहिस्सलाम ने बुलाकर फ़रमाया कि मुझे सूरः बय्यिनहू सुनाओ। हदीस पाक के अल्फ़ाज़ का मफहूम यह निकलता है कि मुझे हुक्म हुआ है कि मुझे सूरः बय्यिनह सुनाओ। बड़े समझदार थे। पूछते हैं कि ऐ अल्लाह के महबूब! क्या अल्लाह तआला ने मेरा नाम

लेकर फरमाया है? नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने तुम्हारा नाम लेकर कहा है कि इब्ने सअद से कहो कि कुरआन सुनाये। महबूब आप भी सुनेंगे और मैं परवर्दिगार भी सुनूँगा। हज़रत उबई बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु की आँखों से आँसू, निकलने लगे। आप रोने लगे।

जन्नत किनको मिलेगी?

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने टाट का लिबास पहना हुआ हैं जो कुछ घर में था वह सब कुछ महबूब की ख़िदमत में पेश कर चुके हैं, ऊपर से जिब्राईल अलैहिस्सलाम उतरते हैं। नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में सलाम पेश करते हैं और फ़रमाते हैं ऐ अल्लाह के नबी! मुझे अल्लाह तआला ने भेजा है वह सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के अमल से इतना खुश हैं कि आसमान में सब फ़रिश्तों को हुक्म हुआ है कि तुम टाट का लिबास पहनो। वही लिबास पहनकर मैं हाज़िर हुआ हूँ। और अल्लाह तआला ने इसलिये भेजा है कि जाओ पूछकर आओ कि क्या अबूबक्र इस हाल में मुझसे खुश हैं? हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने सुना तो उनकी आँखों में आँसू आ गये। कहने लगे मैं अपने रब से हर हाल में राज़ी हूँ। तो जिसको यह पता चल जाये कि अल्लाह तआला मुझसे राज़ी हैं, उसके लिये इससे बड़ी खुशी की बात और कोई नहीं हो सकती। इसी लिए जिसके दिल में यह गम लगा हो कि अल्लाह तआला राज़ी हो जायें तो उसको चाहिए कि गुनाहों से बचे और दिल में अल्लाह से डरे। अल्लाह तआला ऐसे बन्दे को जन्नत अता फ़रमायेंगे। अल्लाह का फ़रमान है:

'और जो शख़्स (दुनिया में) अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा होगा और नफ़्स को (हराम) इच्छा से रोका होगा, सो जन्नत उसका ठिकाना होगा।'

बल्कि आम मोमिनों को एक जन्नत और अल्लाह से डरने वालों को अल्लाह तआला दो जन्नतें अता फरमायेंगे। जैसे लोगों ने एक घर बनाया होता है और एक मेहमान खाना बनाया होता है, लगता है कि इन डरने वालों को अल्लाह तआला इस तरह जमाअत की शक्ल में जाने की तौफ़ीक़ देंगे कि उनका घर अपना अलाहिदा होगा और उनकी मेहमान–नवाज़ी का सिलसिला अलाहिदा होगा। इसलिए असली मक़सद अल्लाह तआला की रिज़ा और उसकी खुशी है।

''सारा शहर हसीनों से भरा पड़ा है, मगर मैं हूँ और मेरे महबूब का ख्याल है। मैं क्या करूँ जो एक आँख वाला होता है वह हमेशा एक ही की शक्ल को देखता है।''

तो सालिक (अल्लाह की राह का मुसाफ़िर) भी हक़ीक़त में एक आँख का हो जाता है। क्या मतलब? मतलब यह कि उसकी निगाहें सिर्फ अपने मतलूब और उद्देश्य पर केन्द्रित हो जाती है। अल्लाह तआला ही उसका मतलूबे हकीकी और मकसूद बन जाता है। उसके दिल से यह निकलता है कि ऐ अल्लाह! मेरा मकसूद तो तू ही है। मुझे अपनी रिज़ा और अपनी मुहब्बत से नवाज़ दे। और मुझे अपनी पहचान और ताल्लुक़ का ज़ौक व शौक अता फ़रमा।

इश्के हकीकी और इश्के मजाज़ी

आज दुनिया में दो सोचें रखने वाले हैं– एक तरफ़ दुनियादार हैं दुनिया की तरफ़ बुलाने वाले, फ़िल्मों में काम करने वाले, गाना गाने वाले, दुनिया के मतावले, कभी उनकी शक्लें देखें उनसे कैसी नहूसत बरस रही होती है। और दूसरी तरफ़ अम्बिया–ए–किराम और उनके गुलाम है। दुनियादार बुराई और गुनाह की तरफ़ बुलाते हैं और अल्लाह वाले इश्क की तरफ़ बुलाते है। इश्के हकीकी इश्क है, और इश्के मजाज़ी हक़ीक़त में बुराई और गुनाह है। तो अम्बिया–ए–किराम तो इश्क़ की तरफ़ बुलाते हैं और ये दुनियादार इन्सान को बुराई और गुनाह की तरफ़ बुलाते हैं। ज़रा उनके चेहरों का तसव्वुर कीजिए। आप देखेंगे कि जो दुनिया की मुहब्बत में गिरफ्तार हैं उनके चेहरों पर नहूसत बरस रही होती है। जबकि अल्लाह वालों के चेहरों के ऊपर अल्लाह की रहमतें बरस रही होती हैं। ''उनके सामने उनके बुरे अमलों को भी शैतान अच्छा बनाकर पेश कर देता है।''

तो वे कहते हैं कि खाओ–पियो, मज़े उड़ाओ और दूसरी तरफ़ औलिया–ए–किराम हैं जो कहते हैं कि

मेहनत करो, रब को मनाओ । तो ये दो रास्ते हैं, हमें चाहिए कि हम मेहनत करके अपने रब को मनाने की कोशिश करें। अल्लाह तआला की मुहब्बत जिसको नसीब हो गई वह बड़ा खुशनसीब इन्सान है। अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाते हैं: ''रहमान के बारे में जानने वालों से पूछो।''जैसे फूल के बारे में कोई पूछना चाहे तो बुलबुल से पूछे। गिध को क्या पता कि फूल क्या चीज़ है। जिसके दिमाग के अन्दर मुर्दार की बू भरी होती है उसको फूल की खुशबू से क्या वास्ता।

एक नुक्ते की बात

अल्लाह तआला की मुहब्बत की बातें भी अजीब हैं, तालिब-इल्मों के लिए एक इल्मी नुक्ता, अल्लाह तआला ने कहीं अपने लिए 'अ-न' (मैं) का लफ़्ज़ इरशाद फ़रमाया और कहीं 'नौं' (हम) का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया। एक वाहिद का सीगा और एक जमा का सीगा। याद रखें कि जब अल्लाह तआला अपनी ज़ात के बारे में कहीं कलाम फ़रमाते हैं तो 'अ-न' का सीगा इस्तेमाल फ़रमाते हैं, और जब जात और सिफ़ात का तज़किरा फ़रमाते हैं तो 'न' का सीगा इस्तेमाल फ़रमाते हैं। इसलिए फ़रमायाः यहाँ खाली जात का तजकिरा है, और जहाँ सिफ़ात भी शामिल होती हैं वहाँ अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

''हम उसकी गर्दन की रग से भी ज्यादा उसके करीब हैं।'' अव ज़ात के साथ सिफ़ात भी शामिल हो गई।

अल्लाह की बन्दों से मुहब्बत

अल्लाह तआला को अपने आशिकों से इतनी मुहब्बत है कि जब कुरआन मजीद में अपने चाहने वालों का तजकिरा किया तो इरशाद फ़रमाते हैं:

''अल्लाह तआला उनसे मुहब्बत करेंगे और वे अल्लाह तआला से मुहब्बत करेंगे।''

अजीब बात है। अक्ल कहती है कि यूँ कहना चाहिए था कि ये अल्लाह तआला से मुहब्बत करेंगे और अल्लाह तआला उनसे मुहब्बत करेंगे, मगर नहीं! मुहब्बत चीज़ ही कुछ और है। परवर्दिगारे आलम को अपने आशिकों से इतना प्यार है, इरशाद फ़रमायाः ''अल्लाह उन बन्दों से मुहब्बत करेगा और ये बन्दे अल्लाह तआला से मुहब्बत करेंगे'' अपनी मुहब्बत को मुक़द्दम (पहले बयान) फ़रमाया।

इसलिए खुशनसीब है वह बन्दा जो अल्लाह तआला से टूटकर प्यार करे।

***

एक औरत वह भी थी

उहद की जंग में एक अन्सारी औरत के बाप, भाई और शौहर तीनों शरीक थे। एक दिन हालात मालूम करने के लिए वह जंग के मैदान में पहंच गई। इत्तफाक़ से उसके बाप, भाई और शौहर तीनों अल्लाह की राह में शहीद हो चके थे। लोगों ने उसे देखा तो यही अन्दाज़ा लगाया कि शायद उसे अपने अज़ीज़ों की शहादत की खबर मिल गई है इसलिए आखिरी दीदार के लिए यहां आई होगी। इसीलिए कुछ सहाबा ने उसे तसल्ली देते हुए फरमायाअज़ीम खातून! तुम्हारे बाप, भाई और शौहर दीन के काम आ गए। यह दर्दनाक खबर सुनकर वह ज़रा भी न घबराई। आंखों में आंसू नहीं आए। चेहरे पर उदासी का कोई प्रसर भी न होने पाया। उसने कहा-जंग में शरीक होने का मतलब ही यही होता है। मैं बड़ी खुशनसीब हूँ कि वह तीनों इस्लाम के काम आ गए। क़ियामत में जब मुझे एक शहीद की बेटी,शहीद की मां और शहीद की बेवा कहकर पुकारा जाएगा तो मेरा सर फरख से ऊंचा हो जाएगा। मैं तो यहां अपने प्यारे रसूल स्वल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की खारयत मालम करने पाई है। मैने सुना है कि दुश्मनों ने प्राप के दांत शहीद कर डाले हैं। इसलिए मुझे बताया कि मेरे प्राक़ा कैसे है? सहाबा ने उसकी हिम्मत वजवांमर्दी को दाद देते हुए फरमाया- नेक खातून ! हमारे प्राक़ा खैरियत से हैं। इतना सुनते ही उसके बेचैन दिल को करार आ गया और बोलीवह सलामत हैं तो सारा जहां सलामत है

औरतों के लिए घरेलू काम का सवाब जिहाद के बराबर

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि औरतों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जिहाद करने से मर्द तो फ़ज़ीलत लूट ले गये, हम औरतों के लिए भी कोई अमल है जिससे जिहाद की फजीलत को हम पा सकें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, हाँ घरेलू काम में तुम्हारा लगना यह जिहाद की फजीलत के बराबर है।

घर के अन्दर के जितने भी काम हैं चाहे उनका ताल्लुक़ खाने पकाने से हो, चाहे सफाई से हो, बच्चों की तर्बियत व परवरिश से हो, या सामान के नज़्म व ज़ब्त से मुताल्लिक़ हो, सबकी निगरानी और देखभाल अच्छी तरह करना औरत की ज़िम्मेदारी है और खुदा, रसूल ने बड़ी फ़ज़ीलत बयान की है और इस पर बड़ा सवाब दिया है। मर्दो को जो जिहाद और क़िताल में सवाब है वही सवाब शरीअत ने इन औरतों को घरेलू काम में दिया है। अफ़सोस कि मालदार औरतें और नई तहज़ीब से मुतास्सिर औरतें उसे ऐब व शराफ़त के ख़िलाफ़ समझती है। वह बर्तन धोने को, झाडू देने को, घर साफ़ करने को, घर में नल, कुंवा हो तो पानी भरने को बुरा, इज़्ज़त व शान के ख़िलाफ़ समझती हैं इसलिए यह काम नौकरानी से लेती हैं। अगरचे नौकरानी रखना माली गुन्जाइश के ऐतिबार से जायज़ है मगर इन कामों के करने में कोई ऐब नहीं। यह तो सवाब का काम है। प्यारी माओ और बहनो! आज सवाब लूट लो, जिहाद जैसा सवाब पा लो, कल आख़िरत में काम आएगा। नवाबों के तरीके और मगरिबी तहज़ीब पर लानत भेजो।



औरत के जिम्मे घरेलू खिदमत है

जम्रह बिन हबीब रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी बेटी हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में फैसला किया कि वह घरेलू काम करेंगी और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु घर से बाहर का काम करेंगे। इब्न क़य्यिम ने जादुलमआद में इब्ने हबीब रजि० की 'अल्-वाज़िहा' से नक़ल करते हुए लिखा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू और हज़रत फातिमा रजि० के दर्मियान फैसला करते हुए जबकि उन्होंने ख़िद्मत और काम के बारे में शिकायत की, फ़रमाया कि फातिमा तो घर के काम अंजाम देगी और हज़रत अली घर के बाहर का काम किया करेंगे। इब्ने हबीब रजि० ने कहा कि घर की ख़िद्मत से मुराद आटा गूंधना, पकाना, बिस्तर बिछाना, झाडू देना और पानी निकालना और घरेलू सारे काम हैं। (ज़ादुलमआद, जिल्द ४, पेज ४०)

इससे मालूम हुआ कि औरत के जिम्मे घरेलू काम को अंजाम देना और घर के इन्तिज़ाम को सही और बेहतर ढंग से चलाना है। घरेलू काम में, खाना पकाना, कपड़े, बिस्तर की सफाई का इन्तिज़ाम करना, घर की सफाई झाडू वगैरह का लगाना, और घरेलू तमाम चीज़ों की हिफ़ाज़त और बच्चों की देखभाल, तर्बियत और निगरानी है। अनाज वगैरह का इन्तिज़ाम, उसकी सफ़ाई और तमाम खाने पीने और बरतने वाले सामान की निगरानी और देखभाल उसके ज़िम्मे है। बाहर से तमाम सामान यहां तक कि पानी तक लाकर देना मर्द के ज़िम्मे है। घर से बाहर का जो काम हो औरत उसके लिए बाहर न जाएगी।

औरत घर की निगहबाना है

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि तुम में से हर एक निगहबान है, तुम में से हर एक से अपने मातहतों के बारे में पूछा जाएगा। आदमी अपने घर वालों का निगहबान है, औरत अपने शौहर के घर में निगहबान है और ख़ादिम व नौकर अपने आका के माल में निगहबान है । खुदा–ए–पाक ने मर्द को बाहरी कामों जिनमें अहम तरीन काम रोज़ी कमाना है उसका हाकिम और निगहबान बनाया है और औरत को अल्लाह ने घर की हाकिमा और उसके तमाम कामों का निगहबान बनाया है। वह घर के तमाम कामों की ज़िम्मेदार है। खाना पकाने, घर की सफ़ाई सुथराई, घरेलू सामान का इन्तिज़ाम उसके जिम्मे है। क्या मंगाना है, सालन दाल वगैरह में क्या लगेगा, कितना पकेगा, घरेलू सामान कौन कहाँ पर रहेगा, किसमें क्या कमी ज्यादती है, बावर्ची खाने का सारा निज़ाम उसी के ज़िम्मे रहेगा। बस मर्द बाहर से लाकर दे दे, हर जगह अपनी बात की ज़िद न करे। न इस मामले में औरतों को परेशान करे कि इतना क्यों ख़र्च हुआ, हाँ बर्बाद और फुजूल खर्च होने के बारे में पूछ सकता है। इसी तरह औरत घर में बच्चे की तर्बियत में हाकिमा है, मुहब्बत,जरूरत और तज्रिबे के मुताबिक़ जो करेगी बेहतर करेगी। घरेलू मामले में औरत खुद हाकिम है, उसके काम में मर्द बिला ज़रूरत दखल न दे। वर्ना घर का निज़ाम बिगड़ जाएगा। खुदाए पाक ने फितरत में घर के निज़ाम के संवारने की सलाहियत दी है। वह खुद बेहतर से बेहतर इन्तिज़ाम करेगी। उस पर ऐतिबार करे, खुदा ने उसके मिज़ाज में घर का काम रखा है, यह खुदाई तकसीम है, इसमें दखल अंदाज़ी घर के निज़ाम को ख़राब करना है।

औरत के लिए उसका शौहर जन्नत है या जहन्नम

हुसैन बिन मुहसिन रजि० बयान करते हैं कि उनकी फूफी नबीए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तशरीफ़ लाईं तो आप सल्ल० ने उनसे पूछा क्या तुम शौहर वाली हो? कहा, हाँ! तो आप सल्ल० ने पूछा कि तुम उनके साथ किस तरह बर्ताव करती हो? उन्होंने कहा, हर मुमकिन तरीके से ख़िद्मत करती हूँ, कोई कोताही नहीं करती हूँ, हाँ मगर यह कि कोई मजबूरी हो। आप सल्ल० ने फ़रमाया, तुम उनकी रिआयत करो वह तुम्हारे लिए जन्नत हैं या जहन्नम।

इस हदीस पाक में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, शौहर तुम्हारे लिए जन्नत है या जहन्नम। यानी उसकी ख़िद्मत उसकी रज़ा व खुशनूदी से तुम जन्नत जा सकती हो, और अगर तुमने उससे अच्छा बर्ताव नहीं किया, उसको नाराज़ किया, उससे ज़बान दराज़ी की और मुक़ाबला किया, उसकी ख़िद्मत व फरमाँबरदारी से तुमने अपने आपको बचाया, उसमें कोताही की तो तुम्हारे लिए जहन्नम है। आम तौर पर आज कल के इस दौर में शुरू उम्र में नफ़्स की खुशी की वजह से तो कुछ ख़िद्मत व रिआयत करती है, जब जवानी ढल जाती है तो दोनों तरफ़ से ताल्लुक़ात ख़राब हो जाते हैं। औरत शौहर की ख़िदमत और रिआयत बराबर करती रहे तो जन्नत की दौलत हासिल कर सकती है। खुदा का हुक्म समझकर आज ख़िद्मत में कोताही न करो, कल जन्नत के मज़े लूट लो।

शौहर को खुश रखने वाली जन्नत में जाएगी

हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि नबीए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जिस औरत का इन्तिक़ाल इस हालत में हो कि

उसका शौहर उस से खुश हो तो वह औरत जन्नत में जाएगी। इससे मालूम हुआ कि शौहर की रज़ा और खुशनूदी जन्नत में जाने की वजह है, इसलिए शौहर को नाराज़ रखना, बात बात पर झगड़े और झंझट करना, शक करना, माल या दूसरे सिलसिले में उसे परेशान करना, शौहर की खुशी और नाखुशी की परवाह न करना, ये बातें अच्छी नहीं। जन्नती औरत का यह मिज़ाज और तरीक़ा नहीं। बहुत सी औरतों को देखा गया है कि शौहर बूढ़े और बीमार हो जाते हैं तो उनकी परवाह नहीं करतीं, उनकी बुढ़ापे में ख़िदमत की कोई परवाह नहीं करतीं। बुढ़ापे और बीमारी की वजह से उनकी ख़िद्मत और खाने पीने में वक्त के लिहाज़ की ज़रूरत होती है तो औरत ऐसी ख़िद्मत से हाथ खींच लेती है, जवानी में नफ़्स की खुशी की वजह से तो साथ दिया अब जब ज़माना खिद्मत का आया तो उससे बचती है। बेटे और बेटी में पड़ जाती है। शौहर इस दुनिया से नाराज़ और दुखी होता है। ऐसी औरत जन्नत में जाने की मुस्तहिक़ नहीं, यही हाल कुछ मर्दो का भी होता है। जवानी में तो बीवी को अच्छी तरह रखा और बुढ़ापे में उसे अलग कर दिया और उससे बे-परवाही बरतने लगा। यह बद-अख़लाक़ी और हक़ तल्फ़ी है। ऐसा मत्लब परस्त इन्सान जन्नत के लायक़ नहीं।

शौहर को खुश रखने का हुक्म

हज़रत अली रजि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ औरतों की जमाअत! खुदा से ख़ौफ़ करो और अपने शौहर की खुशियों पर नज़र रखो। अगर औरत जान ले कि उसके शौहर का क्या हक़ है तो सुबह व शाम का खाना लेकर खड़ी रहे।

मतलब यह है कि जिन बातों से शौहर खुश होता हो, जो उसकी मर्जी और मिज़ाज के मुवाफ़िक़ हो, जिस से उसे राहत मालूम होती हो, जिसको वह पसन्द करे (और उसमें गुनाह न हो) उसको मालूम करती रहे और उसी को इख़्तियार करे। जैसे उसे पसन्द है कि गर्म खाना हो, गर्म रोटी हो तो ताज़ा और गर्म खाना पेश करे। उसे पसन्द हो कि नाश्ता सुबह जल्दी मिल जाए तो सुबह जल्दी उठकर उसका इन्तिज़ाम कर दिया करे। और वह किसी वक़्त चाय पीने का आदी हो तो उसके कहने और इन्तिज़ार से पहले इन्तिज़ाम रखे। इसी तरह शौहर घर में संवरने को कहे, उम्दा लिबास पहनने को कहे, बाल व चेहरे वगैरह को बेहतर बनाए रखने को कहे तो उसमें हरगिज़ मुखालफ़त न करे, कि यह उसका हक़ है। ये सब बातें तो बगैर कहे औरत अंजाम दे कि इसमें औरत का ही फायदा है। कमी होगी तो वह खुद-पूरा करेंगे, हाँ मगर बे-पर्दगी की इजाज़त नही। खड़े रहने का मतलब यह है कि उसके कहने और बोलने का इन्तिज़ार न करे। वक्त से पहले ही तैयार रखे। बिला तक़ाज़ा हस्बे आदत पेश कर दे या तक़ाज़ा करने पर देर न करे कि अभी कर रही हूँ, अभी दे रही हूँ और शौहर इन्तिज़ार की ज़ेहमत में परेशान रहे। ***

उम्मत के लिए माफ़ी की दुआ कीजिए सारे मुसलमानों के बराबर नेकियाँ मिलेंगी

इमाम तबरानी रह० ने अपनी मुअजमे कबीर में एक हदीस शरीफ़ नक़ल फ़रमाई है जिसमें जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स रोज़ाना कम-से-कम एक मर्तबा 'अल्लाहुम्मगफ़िरली व लिल मुअ्मिनी-न वल मुअ्मिनात' पढ़ेगा उसको दुनिया के तमाम मुसलमानों में से हर एक की जानिब से एक-एक हसना और नेकी मिलेगी।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से रिवायत है कि हुजूरे अकरम सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स रोज़ाना (यह दुआ) ऐ अल्लाह मेरी मगफ़िरत फ़रमा और तमाम मोमिनीन और मोमिनात की मगफ़िरत फ़रमा कहा करेगा उसको हर मोमिन की तरफ़ से एक-एक हसना और नेकी का तोहफ़ा मिलेगा। (तबरानी, २३/३७०, हदीस ८७७)



क्या आप जानते हैं?

सवाल: वो कौनसा शर्फ है जो हजरत खतीजतुल कुबरा रजि. के अलावा वो दुनिया की किसी भी औरत को हासिल न हवा?
जवाब: वो है रब्बुल आलमीन का सलाम, कहना है के हजरत खतीजतुल कुबरा को रब तख्दुस्त व तआलाने सलाम जिब्रईल अलै. की मशिफत हुजूरे करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुबान से कहलवाया।

सवाल: हजरत खतीजतुल कुबरा रजि. का विसाल किस सन में, किस माह की, किस तारीख को हवा?
जवाब: आपका विसाल दसवी रमजानुल मुबारक, दस नबवी हिजरत से तीन साल पेशकर आलम विसाल की अरतहाल फरमाया।

सवाल: हजरत खतीजतुल की नमाजे जनाजा किसनी पडाई और इनको कब्र में किसने उतारा?
जवाब: सय्यदा खतीजतुल कुबरा रजि. को खुद नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनकी कब्र में दाखिल होकर दफ्न फरमाया और दुवाएं खैर फरमाई। नमाजे जनाजा इस वक्त तक मशरुख न हवी थी।

सवाल: सय्यदा खतीजतुल कुबरा रजि. की कब्र शरीफ कहां हैं?
जवाब:आपकी कब्र शरीफ मक्बरा हजून में हैं। हजुन मकाए मुक्करमा में पहाड़ी के दामन वो कब्रस्तान है। जिसको आज कल जन्नतुल महला के नाम से मशहर हैं।

सवाल: सय्यदा खतीजतुल कुबरा रजि. की उम्र कितनी हुवी?
जवाब: आपकी उम्र शरीफ ६५ साल हुवी। (हवाला– मदारिस अलनबुवत–२ स्वात ७९८)

हजरत निजामुद्दीन (रह०)

आपका नाम मुहम्मद और लकब निजामुद्दीन था। आप (रह०) इसी लकब से मशहूर हुए। वालिद साहब का नाम अहमद बिन अली है, हुसैन सैयदों में से थे। ननिहाली खानदान भी सैयदों का है। दादा ख्वाजा अली और नाना ख्वाजा अरब दोनों के एक ही दादा थे और दोनों बुखारा से आकर कुछ मुद्दत लाहौर रहे, वहाँ से बदायूं आये। सन ६३६ हि. में बदायूं में आप पैदा हुए। हजरत निजामुद्दीन पांच साल के थे कि, बाप का साया सर से उठ गया। वालिदा ने, जो बहुत ही दीनदार औरत थी, उनके लालनपालन, देख-रेख और तालीम व तर्बियत का बडा ही अच्छा इन्तिजाम कर रखा था। किताबें पढने के काबिल हुए तो मौलाना अलाउद्दीन उसूली की शागिर्दी इख्तियार की और फिकह की शुरू की किताबों तक उनसे तालीम हासिल की। कुदूरी खत्म की तो मौलाना अलाउद्दीन ने फरमाया कि, मौलाना निजामुद्दीन अब फजीलत की दस्तार (सबसे ऊंची सनद) बांधो। मां से आकर कहा कि, उस्ताद ने दस्तार बंदी (पगडी बांधने) का हुक्म फरमाया है। मै दस्तार कहां से लाऊं?मां ने कहा, बाबा ! धीरज रखो, मै इसका उपाय करूंगी। चुनांचे रूई खरीदकर उसको कतवाया और बहुत जल्द पगडी तैयार कर दी। दस्तारबंदी के जल्से में मां ने आलिमों और बुजुर्गोंकी दावत की। ख्वाजा अली मुरीद शैख जलालुद्दीन तबरेजी (रहह) ने एक पेंच बांधा और तमाम मौजूद लोगों ने दुआ की।



शैख कबीर से ताल्लुक

हजरत ख्वाजा फरमाते है कि, मै छोटा था, बारह साल का रहा हूँगा, या कुछ कम-ज्यादा, उस वक्त मै नात पढता था। एक आदमी जो अबुबक्र खर्राता के नाम से मशहूर था, उसे अबूबक्र कव्वाल भी कहते थे, मेरे उस्ताद के पास आया। वह मुल्तान होकर आ रहा था। उसने बयान किया कि, मै हजरत शैख बहाउद्दीन जकरीया मुल्तानी के पास से आ रहा हूँ। उसने उनकी बुजुर्गी और बडाई बयान करनी शुरू की। वह बयान करता रहा, मगर कोई चीज मेरे दिल में न जमी। इसके बाद उसने बयान किया कि,मै वहाँ से अजोधन आया। वहाँ मैने दीन का एक बादशाह देखा। उसने शैखुल इस्लाम शेख फरीदुद्दीन (रह०) का जिक्र किया। यह सुनते ही मेरा दिल उनके लिए खिंच उठा और उनकी मुहब्बत मेरे दिल में ऐसी बैठ गयी कि, मुझे उनका नाम लेने में मजा आने लगा और मै हर नमाज के बाद मजे लेकर उनके नाम की रट लगाता। सोलह साल की उम्र में हजरत ख्वाजा बदायूं से दिल्ली आ गये।

दिल्ली मे तालीम

आपने दिल्ली आकर तालीम का सिलसिला जारी रखा। यह मुद्दत तीन-चार साल की थी। दिल्ली में उस वक्त बडे नामी उस्ताद इकट्ठा थे। यह सुल्तान नासिरूद्दीन महमूद का दौर था। गयासुद्दीन बलबन उस वक्त वजीर था और मौलाना शमसुद्दीन ख्वारिजमी, जो मुस्तौफिल मुमालिक (यह एकाऊंटेंट जनरल का ओहदा था और किसी बहूत बडे आमिल ही को मिलता था) उस्तादों के उस्ताद की हैसियत रखते थे। इन्हे शम्सुल मुल्क का खिताब मिला हुआ था। उलमा की तरह पढने-पढानेका सिलसिला भी चल रहा था।

हजरत ख्वाजा (रह०) उनके दर्स व हल्के (पढाई की क्लास) में शामिल हुए। मौलाना शम्सुद्दीन को हजरत (रह०) से खास ताल्लुक था और वह उनके महबूब शागिर्द थे। ख्वाजा शम्सुल मुल्क की आदत थी कि, अगर कोई शागिर्द नागा कर देता था या देर से आता था तो फरमाते थे कि, आखिर मुझसे क्या गलती हुई थी कि, आप नही आये। हजरत ख्वाजा यह किस्सा बयान करते हुए मुस्कराये और कहा कि, अगर किसी से मजाक फरमाते तो कहते कि मुझसे क्या गलती हुई थी कि आप नही आये ताकि मै फिर नही गलती करूं, लेकिन मुझसे नागा हो जाता या देर में जाता तो मेरे जी में आता कि, आज मुझसे भी यही फरमायेंगे। लेकिन आप ऐसा न करते। इसका जिक्र करते हुए ख्वाजा (रह०) की आंखों में आंसू आ गये और सब सुननेवालों का मन भर आया। फरमाया, बेहद मुहब्बत की वजह से मुझे अपने हुजरे में अपने साथ बिठाते, मै हजार मना करता लेकिन मंजूर न फरमाते।

हदीस की इजाजत

आपने अपने जमाने के मशहूर मुहद्दिस शैख मुहम्मद बिन अहमद अल–मारीकली मशहूर कमालुद्दीन जाहिद (विसाल ६८४ हि.) से पढी। फिकह में उनको एक वास्ते से हिदाया के लिखनेवाले अल्लामा बुर्हानुद्दीन अल–मर्गीनानी की शागिर्दी हासिल थी। आपने उनसे मशारिकुल अन्वार का दर्स लिया और हदीस की इजाज हासिल की।

मां का इन्तिकाल

दिल्ली ही में हजरत ख्वाजा (रह०) थे कि, उनकी मां का इंतिकाल हो गया। एक दिन एक मुद्दत के बाद हजरत ख्वाजा ने अपनी मां के इंतिकाल का जिक्र किया। जिक्र करते हुए रोने लगे और इतना रोये कि, जो कुछ फरमाते थे, पूरे तौर पर सुनने में न आता था। हजरत ख्वाजा (रह०) फरमाते है कि, एक दिन नया चांद देखकर हाजिर हुआ और कदमबोसी की और नये चांद की मुबारकबाद पहले की तरह पेश की। फरमाया कि, अगले महीने के चांद के मौके पर किसकी कदमबोसी करोगे? मै समझ गया कि इंतिकाल का वक्त करीब है। मेरा मन भर आया, मै रोने लगा, मैने कहा, मां मुझ गरीब व बेचारे को आप किसके सुपुर्द करती है? फरमाया,इसका कल जवाब दूंगी। मैने अपने दिल में कहा कि इस वक्त क्यों नही जवाब देती? यह भी फरमाया कि, जाओ, आज रात शैख नजीबुद्दीन के यहां रहो। बस उनके कहने के मुताबिक मै वहाँ गया। रात के आखिरी हिस्से में नौकरानी दौडती हुई आयी कि बीबी तुमको बुला रही है। मै डरा और मैने पूछा, खैरियत है?कहा, हां। जब मै हाजिर हुआ तो फरमाया कि, कल तुमने मुझसे एक बात पूछी थी, मैने उसका जवाब देने का वादा किया था। अब मै इसका जवाब देती हूँ, ध्यान से सुनो। फरमाया,तुम्हारा दायां हाथ कौन सा है? मैने हाथ सामने कर दिया, मेरा हाथ अपने हाथ में लिया और फरमाया, ऐ खुदा! इसको तेरे सुपुर्द करती हूँ। यह कहा और रूह जिस्म से जुदा हो गयी। मैने इस पर खुदा का बहुत शुक्र अदा किया और अपने दिल में कहा कि अगर माँ सोने और मोतियों से भरा हुआ एक घर छोड़कर जाती तो मुझे इतनी खुशी न होती।

अजोधन की पहली हाजरी

हजरत ख्वाजा अजोधन हाजिर होने से पहले दिल्ली में शैख कबीर के सगे भाई ख्वाजा नजीबुद्दीन मुतवक्किल से मुलाकात कर चुके थे, बल्कि कुछ दिनों तक उनके साथ रहना भी हुआ था। उनकी सोहबत और बातचीत ने शैख कबीर के साथ मुहब्बत की उस चिंगारी में, जो बचपन में, बदायूं में रहने की मुद्दत में तबीयत में पैदा कर दी थी, उसे भडका दिया। आपने शैख कबीर की खिद्मत में हाजिरी का इरादा कर लिया। यहाँ तक कि आप उनकी खिदमत में पहुँच भी गये। अपनी इस मुलाकात और पहली हाजिरी का हाल खुद ही बयान फरमाया, इर्शाद हुआ कि मै जब शैख कबीर की खिद्मत में हाजिर हुआ तो आपने मुझे देखते ही यह शेर पढा

ऐ जुदाई की आग ! दिल को कबाब कर दें।
ऐ चाव के बहाव! जान को खराब कर दे।

मै बावजूद बे–हद ख्वाहिश के, चाहता था कि, आपके कदमों में गिर पडूं, लेकिन शैख के रोब ने मुझे

बिल्कुल पत्थर की मुर्ति बनाकर रख दिया था। शैख ने जब देखा कि मुझपर रोब छा गया है तो फरमाया, हर नये आनेवाले पर रोब होता ही है। शैख कबीर (रह०) ने हजरत ख्वाजा की बड़ी खातिर फरमायी। इर्शाद हुआ कि, इस परदेसी तालिबे इल्म के लिए जमाअत खाना मे चारपाई बिछा दी जाए। हजरत ख्वाजा फरमाते है कि, जब चारपाई बिछ गयी तो मैने अपने दिल में कहा कि, मै हरगिज उस चारपाई पर आराम न करूंगा। न जाने कितने बुजूर्ग, हाफिज और अल्लाह के आशिक जमीन पर सो रहे है, मै चारपाई पर लेटूं? मैने अर्ज किया कि, शैख के इर्शाद को पूरा करूंगा। फरमाया कि जाओ, चारपाई पर सो जाओ। इसी हाजिरी में किसी वक्त हजरत ख्वाजा जिस इरादे से आये थे, उसे पूरा किया और शैख कबीर से बैअत हो गये। उस वक्त आपकी उम्र बीस साल की थी।

शेख कबीर से दर्स

शैख कबीर की यह खास मेहरबानी थी कि, आपने हजरत ख्वाजा को खुद ही कुछ चीजें पढानी शुरू की। फरमाया: निजाम ! तुमको कुछ किताबें मुझसे भी पढनी होंगी। चुनांचे किताब अवारिफुल मआरिफ और तम्हीद अबू शकूर सालमी पढायी, फिर तजवीद की तालीम भी दी और पुरे छ: पारे तज्वीद के साथ पढाये। शैख कबीर ने हजरत ख्वाजा की तर्बियत पर भी खास तवज्ञोह दी। ख्वाजा फरमाते है कि, मै शैख कबीर की खिदमत में अजोधन हाजिर था। एक आमिल भी, जो मेरे साथी और दोस्त थे और हम दोनों एक साथ मिलकर अपने असब याद करते थे, अजोधन आये। उन्होने जब मुझे फटे-पुराने कपड़ों में देखा तो बडी हैरत और अफसोस के साथ मुझसे कहा, मौलाना निजामुद्दीन! तुमने अपना क्या हाल बना लिया है? अगर तुम शहर में पढने-पढाने में लगे रहते तो आज कही से कही पहूँचते और बडी शान व शौकत से रहते। मैने अपने दोस्त की, यह बात सुनी और उनसे माफी चाह ली। इसके बाद जब मै शैख कबीर की खिदमत में हाजिर हुआ तो उन्होने खुद ही फरमाया कि निजाम ! अगर तुम्हारा कोई दोस्त तुम्हें मिले और तुमसे कहे कि, तुमने अपना क्या हाल बना लिया है और पढने-पढाने का वह सिलसिला क्यों छोड दिया। जो खुशहाली और सुख-चैन का जरिया बनता और यहां इस हाल में क्यों हो तो तुम इसका क्या जवाब दोंगे? मैने अर्ज किया कि, जो फरमाये, वही कह दूंगा। फरमाया अगर कभी कोई ऐसा सवाल करे तो कहना,तेरा रास्ता मेरे रास्ते से अलग है। इसके बाद हुक्म हुआ कि, खानकाह के बावर्चीखाने से मुख्तलिफ किस्म के खाने एक थाल में अपने सर पर रखकर उस दोस्त के पास ले जाओ। मैने हुक्म पर अमल किया। मेरे दोस्त ने जब यह मंजर देखा तो रोता हुआ दौडा और मेरे सर से थाल उतारा और कहने लगा कि तुमने यह क्या किया? मैने सारा किस्सा सुनाया। उसने यह सुनकर कहा कि, तुम्हारे शैख ऐसे है कि उन्होंने तुमको इस जगह तक पहुँचा दिया है कि, अपने आपको भूल जाओ। मुझे भी उनकी खिदमत में ले चलो। जब वे खाने से फारिग हुए तो अपने नौकर से कहा कि, यह थाल उठाओ और हमारे साथ चलो। मैने कहा कि नही, जैसे मै यह थाल अपने सर पर रखकर लाया हूँ, वैसे ही सर पर रखकर ले जाऊंगा? गरज हम दोनों खिदमत में पहुंचे और हमारे दोस्त ने हजरत के हाथ पर बैअत व तौबा की। हजरत ख्वाजा शैख कबीर की जिंदगी में तीन बार अजोधन हाजिर हुए। एक हाजिरी में एक दिन १५ जुमादल ऊला को जुमा की नमाज के बाद तलबी हुई। शैख कबीर ने अपने मुंह की राल हजरत ख्वाजा के मुंह में डाला, कुरआन मजीद के हिफज की वसीयत फरमायी। फरमाया कि, खुदा ने दीन व दुनिया तुमको दी, यहां सब कुछ यही है, दिल्ली की तरफ रवाना किया और फरमाया, हिंदुस्तान की तरफ जाओ, तुम्हारी एक नजर काफी होगी। फरमाया कि, दिल्ली जाना तो काम में लगे रहना, बेकार रहना कुछ नही। नफ्ली रोजा रखना आधा रास्ता है, दूसरे अमल नमाज व हज नफ्ली आधी राह। सियरूल औलिया में है कि, खिलाफतनामा लिखकर दिया और हिदायत की, कि मौलाना जमालुद्दीन को हांसी में और काजी मुंतखब को दिल्ली में दिखा देना। इर्शाद हुआ कि तुम एक साएदार पेड होगे,

जिसके साए में अल्लाह की मख्लूक आराम पायेगी। हजरत ख्वाजा फरमाते है कि, वापसी में मैने हांसी में शैख जमालुद्दीन को खिलाफतनामा दिखाया, बहुत खुश हुए्। इसी हाजिरी मे पहली शाबान को हजरत ख्वाजा की तरफ से शैख कबीर की खिदमत में इस दुआ की दर्खास्त पेश की गयी कि, लोगों के चारों तरफ चक्कर न लगाना पडे। दर्खास्त कबूल हुई और दुआ फरमाई गयी।

एक मौके पर फरमाया कि, मैने अल्लाह से तुम्हारे लिए थोडी सी दुनिया भी मांग ली है। ख्वाजा साहब फरमाते है कि, मै यह सुनकर चिंता में पड़ गया कि, बडे–बडे लोग दुनिया की वजह से आजमाइश में पड गये, मेरा क्या हाल होगा। शैख ने फौरन ही फरमाया कि, तुम आजमाइश में नही रहोगे । इत्मीनान रखो, तब जाकर मुझे इत्मीनान हुआ।

अजोधन से दिल्ली को

ख्वाजा निजामुद्दीन (रह०) अब अपने मुर्शिद, पीर व बुजुर्ग से रूखसत होकर हिंदुस्तान में दुनिया के सच्चे मालिक का पैगाम पहुँचाने निकले। यह ऐसा फकीर और खामोश तबियत आदमी था जो हिंदुस्तान, बल्कि सातवीं सदी हिजरी की इस्लामी दुनिया की सबसे मजबूत इस्लामी राज की राजधानी को जा रहे थे। उसके पास खुलूस, अल्लाह पर भरोसा और दुनिया से बेनियाजी के अलावा कोई सामान और हथियार वगैरह नही है। शैख कबीर ने कई बार यह ताकीद की थी कि, मुसलमान को खुश रखने की पूरी कोशिश करना और हकवालों को राजी करने में कोई कसर न उठा रखना। ख्वाजा फरमाते है कि, मै जब दिल्ली चला तो मुझ याद आया कि मुझे २० जीतल एक आदमी के देने है और एक किताब मैने किसी से उधार ली थी। वह खो गयी है। मैने बदायूं के जमाने में यह इरादा कर लिया था कि, मै जब दिल्ली पहुँचूंगा तो इन मामला वालों को राजी करने की कोशिश करूंगा। जब मै अजोधन से दिल्ली वापस आया तो जिस आदमी के बीस जीतल मुझे देने थे, वह बजाज था। मैने उससे कपडा खरीदा था। किसी वक्त २० जीतल मेरे पास जमा नही हुए कि मै उसको पहुँचा देता। बड़ी तंगी चल रही थी, कभी पांच जीतल हाथ आये, कभी दस। एक बार दस जीतल मिले मै उस बजाज के दरवाजे पर पहुँचा, उसको आवाज दी। वह बाहर आया तो मैने उससे कहा कि, तुम्हारे बीस जीतल मेरे जिम्मे है, एक बार तो मुझे देने की ताकत नही। यह दस जीतल लाया हूँ इसको ले लो, दस अगर अल्लाह ने चाहा, तो इसके बाद पहुंचा दूंगा। उस आदमी ने यह सुनकर कहा कि हां, मालूम होता है कि तुम मुसलमानों के पास से आ रहे हो। उसने वह दस जीतल तो ले लिए और कहा कि मैने दस जीतल माफ किये। इसके बाद मै उस आदमी के पास गया, जिसकी किताब मैने ली थी। उसने मुझे पहचाना। मैने कहा कि, साहब ! मैने आपसे एक किताब उधार ली थी, वह खो गयी। अब मै उसकी नकल तैयार करके आपको दूंगा। मै बिल्कुल उसी तरह लिखवा कर आपको पहुँचा दूंगा। उस आदमी ने कहा कि, हां, तुम जहां से आ रहे हो, वहाँ का यही नतीजा होना चाहिए। इसके बाद उसने कहा कि, मैने वह किताब तुमको बख्शी।

तंगी के दिन

ख्वाजा (रह०) दिल्ली तशरीफ लाये तो आजमाइश का वह दौर शुरु हुआ जो उस राह के राहियों को, जो आगे चलकर सबकी नजरों का तारा बनते है, आदत के तौर पर पेश आती है। यह वह वक्त था कि, सारे भारत की दौलत और जर व जवाहर दिल्ली उमंड कर आ रहे थे और सस्ताई का यह हाल था कि एक जीतल में दो सेरे मैदे की पकी–पकायी रोटियां मिल जाती थी और दो जीतल में एक मन खरबजा आ जाता था लेकिन ख्वाजा साहब की तंगी का यह हाल था कि, फरमाते है कि मेरे पास एक दांग भी न होता कि उससे मै रोटियां खरीद कर खाऊं और मां–बहन और घर के उन लोगों को खिलाऊंजो मेरे जिम्मे थे। खरबूजे की इस बहुतायज के बावजूद पूरी–पूरी फसल गुजर जाती और खरबूजा चखने को न मिलता, लेकिन अपने इस हाल में खुश रहता और आरजू करता कि जितनी फसल बाकी है, वह भी गुजर जाए और मै इसी हाल में रहूँ। उसी जमाने में जब कि आप शहरपनाह के उस बुर्ज में ठहरे हुए थे, जो मंदा दरवाजा से मिला हुआ है, कई दिन गुजर गये और खाने को कोई चीज न मिली। ****

पेड़ों, फलों, गल्ला, खेती, सब्जी व तरकारी और बागों को ख़्वाब में देखने की ताबीर

पेड़:

सभी पेड़ों की ताबीर मर्दो से की जाती है। और उनके हालात की ताबीर इसी तरह की जाएगी जिस तरह उस पेड़ की तबीयत और उसका नफा और खुशबू वगैरह होती है। मिसाल के तौर पर अगर किसी ने यह देखा कि कोई फल पाया या पत्ता पाया तो उसकी ताबीर यह है कि वह बहुत–सा माल और रोज़ी किसी ऐसे शख्स से पाएगा जो उस पेड़ के दर्जे के बराबर होगा।

लकड़ीः

अगर सख़्त लकड़ी देखी तो उसकी ताबीर दीन में खराबी और मुनाफिक आदमियों से दी जाती है। और जलने वाली लकड़ी सूखी हो या तर, बड़ी हो या छोटी, उसकी ताबीर सख़्त लकड़ी की तरह होगी। और अगर बिल्कुल छोटी तीलियाँ देखे तो उसकी ताबीर यह होगी कि लोगों में चुग़ली चलने वाली है।



लाठीः

लाठी की ताबीर यह है कि वह शरीफ़ आदमी है जिसकी पैरवी की जाती है और वह भरोसे के काबिल आदमी है।

काँटेदार पेड़ः

इसकी ताबीर ऐसे आदमी हैं जिनसे ख्वाब देखने वाले को बुराई और मुश्किल पेश आएगी और काँटा तो खुद ही दुःख देने वाला है कि अगर इन्सान में लग जाए तो उसके कौल और फेल से ख्वाब देखने वाले तो तक्लीफ होगी। और कभी काँटा ख्वाब में देखने की ताबीर यह है कि उस इन्सान को कोई मुसीबत पहुँचेगी, जो उसकी तक्लीफ़ की वजह बनेगी या कोई ऐसा खौफनाक मामला होगा जिसमें वह पड़ जाएगा।

अंगूर और अनार के बागः

इसकी ताबीर औरत से की जाती है। अगर किसी ने यह देखा कि उसने उनको बोया और वह सायादार बन गया और बड़ा हो गया, तो उसको इज्ज़त मिलेगी और यह इज़्ज़त उस पेड़ की कद्र व कीमत के बराबर होगी। और कभी उसकी ताबीर बच्चे से की जाती है कि वह जवान हो जाए। और अगर सिर्फ एक पेड़ देखा तो उसकी ताबीर एक हज़ार दिर्हम है।

मौसम का अनारः

अगर मीठा अनार ख्वाब में देखे तो उसकी ताबीर यह है कि वह जमा किया हुआ माल है। और अगर ख़्वाब में यह देखा कि उसने उसको पूरा खाया या उसमें से कुछ खाया तो उसकी ताबीर यह है कि दौलत का एक पूरा ढेर उसको मिलेगा और वह हर चीज़ की एक ज़्यादा मिकदार (मात्रा) मिलने की दलील है।

खट्टा अनारः

ख्वाब में देखने की ताबीर यह है कि अगर उसने ख्वाब में खा लिया तो उसको रंज व ग़म पेश आयेगा और इसी तरह हर खट्टे फल की ताबीर है।

सेबः

ख्वाब में सेब देखने की ताबीर आदमी के धंधे, उसकी आमदनी और उसकी हिम्मत से की जाती है कि अगर

उसको बादशाह ने खाया तो उसका मुल्क है। और अगर ताजिर ने खाया तो उसकी तिजारत है। और अगर किसी कारीगर ने खाया तो यह उसका धंधा है। जैसे अगर किसी ने यह देखा कि उसने सेब को पा लिया या उसको खा लिया या उसका मालिक बन गया तो वह उस हिम्मत से दुनिया पाएगा उसकी तरोताज़गी और लज़्ज़त कमी व ज़्यादती के हिसाब से।

तुरंजः

अगर किसी ने ख्वाब में ज्यादा देखा तो वह अच्छा माल है और अगर एक या दो या तीन तुरंज देखा तो उसकी ताबीर नेक औलाद है। और तुरंज की ज़र्दी देखने से कोई नुकसान नहीं्।

पीला मेवाः

जैसे बिही (यह एक फल है जो सेब की तरह होता है) सेब, ज़ाफ़रान, अमरूद और ज़र्द आलू वगैरह को अगर किसी ने ख़्वाब में देखा तो उसकी ताबीर यह है कि देखने वाला बीमार हो जाएगा। और अगर उनको सब्ज़ (हरे रंग का) देखा तो उस का देखना ऐसी रोज़ी की दलील है जो नफ़ा न दे।

तरबूज़ः

अगर किसी ने ख़्वाब में हरा तरबूज़ देखा तो उसकी ताबीर यह है कि रोज़ी मिलेगी। और पीले को अगर ख़्वाब में खाते देखा तो उसकी ताबीर यह है कि वह बीमार हो जाएगा।

केलाः

जिसने उसको ख्वाब में देखा उसकी ताबीर यह है कि उसको माल मिलेगा और देखने वाला दीनदार है तो उसके दीन में ज्यादती होगी और उसका पीलापन या खट्टान नुकसान न देगा और न बे–मौसम में देखना नुकसान करेगा। और हर किस्म का केला देखना भलाई ही भलाई है।

अंगूरः

अगर सफ़ेद व लाल अंगूर किसी ने ख्वाब में देखा तो यह दुनिया की दो बाजू हैं्। अगर मौसम में देखा तो बेहतर है, और अगर बे–मौसम में देखा तो वह बीमारी है। और जिसने ख्वाब में उसको खाया तो जितने दाने खाए उतने ही कोड़े उसके जिस्म पर पड़ेंगे और या उसके जिस्म में उतने ही दाने निकलेंगे। और अगर अंगूर का रंग काला हो तो कोई नफ़ा न होगा इसलिए कि नूह अलैहिस्सलाम ने अपने लड़के को गुस्से की हालत में बद–दुआ दी थी तो वह अंगूर जो उनके हाथ में था वह काला पड़ गया था, तो इसमें कोई भलाई नहीं। और अगर किसी ने यह देखा कि वह अंगूर निचोड़ रहा है तो उसकी ताबीर यह है कि वह बादशाह की ख़िदमत करेगा। और इसी तरह जिसने यह देखा कि जैतुन निचोड़ रहा है तो उसकी भी ताबीर यही होगी कि बादशाह की खिद्मत करेगा। और अच्छा तेल वगैरह देखने की ताबीर यह है कि अगर किसी ने उसको पा लिया तो वह बरकत व भलाई और माल व सरसब्जी पाएगा। और मुनक्क़ा लाल हो या काला उसकी ताबीर माल व भलाई और रोज़ी व नफा है, जो उसको पाए।

इजीरः

इंजीर की ताबीर गम व पछतावा है, इसलिए कि हमारे बाप आदम सहिस्सलाम जब जन्नत से निकले तो इसी के नीचे बैठे थे।

अखरोटः

अगर पूरा अखरोट है तो उसकी ताबीर गुफ़्तगू और झगड़ा और रोजी है। लेकिन बिला दुःख व थकन के हासिल होगा।

बादामः

ताज़ा हो कि सूखा उसकी ताबीर छुपे हुए माल से है, और इसी तरह पिस्ता की ताबीर है।

बुन्दुकः

(१) इसकी ताबीर अच्छे माल से की जाती है। और हर पेड़ जिसको को फल नहीं होता जैसे सर्व और दन्फ़ (२) और आस और इसी तरह के और पेड़, इसकी ताबीर ऐसा आदमी है जिसका नफ़ा बहुत कम है। और हर वह पेड जो खुशबूदार है उसकी ताबीर ऐसे शरीफ़ मर्द से की जाती है जो काबिले तारीफ़ हो और हर बदबूदार पेड़ को देखने की ताबीर यह है कि वह गन्दे ज़ेहन का आदमी है।

(१) एक पेड़ का फल है। बुन्दुक अरबी कश्मीरी बादाम को कहते हैं और बुन्दुके हिन्दुस्तानी रीठे को कहते है। (२) दन्फ़ के मायने आम तौर पर लुगात में जानवर के दर्ज हैं, मालूम नहीं मुसन्निफ़ (लेखक) की क्या मुराद है।

गल्ले के दानेः

ताज़े गेहूँ सूखे गेहूँ से अफ़ज़ल है। अगर किसी ने यह देखा कि ताज़ा गेहूँ खा रहा है तो उसकी ताबीर यह है के वह दीन की सलाहियत पाएगा और पाक रोज़ी उसको मिलेगी। और अगर किसी ने यह देखा कि वह सूखे गेहूँ या पके हुए गेहूँ खा रहा है तो इसमें कोई भलाई नहीं हमारे बाप आदम अलैहिस्सलाम के किस्से की वजह से।

जौः

इसका देखना गेहूँ से अच्छा है चाहे ताज़ा हो या सूखा, पका हुआ हो कि भूना हुआ, सब अच्छा है और पाक रोज़ी है, चाहे उसको खाए या मिले।

आटाः

यह सबका सब जमा किया हुआ माल है जो बहुत ज्यादा हो, चाहे वह जौ का आटा हो या गेहूँ का। और अनाजों का आटा देखना रोटी से बेहतर है, इसलिए कि रोटी को तो आग छूती है और साफ़ रोटी माल है जो ज़रूरत से ज्यादा हो। और जिसने उसको खाया उसकी ताबीर यह है कि उसका ऐश अच्छा रहेगा।

गूंधा हुआ आटाः

इसकी दलील है कि उसकी नस्ल ज्यादा होगी। और अगर उसके पास फलदार पेड़ होंगे तो फल ज़्यादा होंगे। अगर किसी ने यह देखा कि वह आटा गूंध रहा है तो उसकी ताबीर यह है कि उसकी नस्ल और उसके बाग का फल और उसकी खेती सब में ज्यादती होगी और रोज़ी भी उसकी ताबीर है, लेकिन रंज व मेहनत से हासिल करेगा।

चावलः

इसकी ताबीर माल से है, जिसे हासिल करने के लिए गम व रंग उठाएगा।

तिलः

इसकी ताबीर यह है कि वह तरक्की करने वाला माल है जो हर वक़्त बढ़ता रहेगा।

जवार–बाजराः

इसकी ताबीर वह माल है जो कमाने के लिहाज़ से रद्दी है।

लोबियाः

इसकी ताबीर लम्बे गम व दुःख से है।

चना, मसूर, मटरः

इसकी ताबीर उस माल से की जाती है जो पाक नहीं और जिसमें रंज व गम है।

खेतः

अगर किसी के पास खेत हो तो उसको ख्वाब में देखने की ताबीर यह है कि दीन और दुनिया में उसकी भलाई है। और अगर किसी ने यह देखा कि वह खेती में चल रहा है तो खेती की हरियाली और अच्छी होने के मुताबिक़ उसकी दीन व दुनिया भली होगी। और कभी खेती की ताबीर ऐसे लोगों से भी होती है जो उस जगह किसी रंज के मौके पर इकट्ठा हों। और अगर किसी ने यह देखा कि खेती काटी गई है तो उसकी ताबीर यह है कि लोगों के कत्ल की तरफ इशारा है। ****

पान नं१० से जारी

किसी राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में किसी विशेष अल्पसंख्यक समुदाय को छात्रवृत्ति के वितरण का लक्ष्य पूरा नहीं होता है, तो इसे अन्य राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में मैरिट के अनुसार उसी अल्पसंख्यक समुदाय में वितरित किया जाएगा।

किसी विशेष राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में रह रहा छात्र, उसके अध्ययन का स्थान कोई भी होते हुए, उसी राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कोटे के अंतर्गत छात्रवृत्ति का पात्र होगा।। छात्रवृत्ति की संख्या को, राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की अल्पसंख्यक जनसंख्या के आधार पर राज्यवार निर्धारित किया गया है। राज्यवार आबंटनों में से विख्यात संस्थानों के आवेदनों पर पहले विचार किया जाएगा। ऐसे संस्थानों की सूची मंत्रालय की वेबसाइट अर्थात https://www.minorityaffairs.gov.in पर उपलब्ध कराई जाएगी।

शायरी: (जहांनूरे नजीर पेठ–इस्लामपूर)

तहजीबे इस्लाम मेरे आखिरत का सरमाया
देख कर नूरे मोहम्मद का चेहरा चांद भी शरमाया
एक पल भी हुजूर की अजमत को समझ पाओगे
मेरा दावा है अपने आप को जन्नत में पाओगे

करीम व शरीफ़ शौहर बीवियों के नाज़ व नखरे बरदाश्त करते हैं

बाज़ लोग अपनी बीवियों को सताते हैं। बीवी से ज़रा-सी गुस्ताख़ी हो जाए तो बीवी को डंडा लेकर पिटाई करते हैं; कहते हैं, ''तुमको नाज़ करने का क्या हक़ है?''लेकिन सुनिए! सरवरे आलम सल्ल० से ज़्यादा कौन गैरतमंद हो सकता है। आप सल्ल० ने फ़रमाया, ''ऐ आइशा! जब तू रूठ जाती है, नाज़ करती है तो मुझे पता चल जाता है।'' अर्ज़ किया,'' ऐ मेरे प्यारे नबी! मेरे माँ-बाप आप पर कुरबान! आप सल्ल० को कैसे मालूम होता है कि मैं आजकल रूठी हुई हूँ?'' फ़रमाया कि जब तू मुझसे रूठ जाती है तो क़सम इस तरह खाती है **व रब्बि इबराहीम!** (इबराहीम के रब की क़सम!) और जब खुश रहती है तो कहती है **व रब्बि मुहम्मदिन!** (मुहम्मद सल्ल० के रब की क़सम!) और आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ दुनियावालो। सुन लो जो लोग अपनी बीवियों को पीट-पीटकर सीधा कर रहे हैं, वे कमीने लोग है।

तफ़सीर रूहुल मआनी (जिल्द ५, पे० १४) में अल्लामा आलूसी रह० ने इस रिवायत को नक़ल किया है कि हुज़ूर सल्ल० इरशाद फ़रमाते हैं कि करीम व शरीफ़ और लाइक़ शौहरों पर ये औरतें गालिब आ जाती हैं क्योंकि जानती हैं कि यह नाज़ उठा लेगा। और कमीने शौहर डंडे के ज़ोर से गाली-गलोज से उन पर गालिब आ जाते हैं। सरवरे आलम सल्ल० फ़रमाते हैं कि मैं पसन्द करता हूँ कि मैं करीम रहूँ चाहे मगलूब रहूँ, और मैं यह पसन्द नहीं करता कि कमीना और बदअख़्लाक़ बनकर उन पर गालिब हो जाऊँ।

हकीमुल उम्मत रह० फ़रमाते हैं कि एक औरत से अपने शौहर के खाने में नमक तेज़ हो गया, वह गरीब आदमी था, छः महीने के बाद मुर्गी लाया था। छः महीने तक दाल खा-खाकर उसकी ज़बान मुर्गी खाने के लिए बेचैन थी। मगर नमक तेज़ कर दिया। लेकिन उसने बीवी को कुछ नहीं कहा। चुपचाप खा लिया और कहा कि या अल्लाह! अगर मेरी बेटी से नमक तेज़ हो जाता तो मैं यह पसन्द करता कि मेरा दामाद उसको माफ़ कर दे, मेरे कलेजे के टुकड़े को कुछ न कहे तो यह मेरी बीवी भी किसी के कलेजे का टुकड़ा है। किसी माँ-बाप की बेटी है और ऐ ख़ुदा! तेरी बन्दी, है बस मैं तेरी रज़ा के लिए इसको माफ़ करता हूँ।

हकीमुल उम्मत हज़रत थानवी रह० अपने वअ्ज में बयान फ़रमाते हैं कि जब उसका इंतिक़ाल हो गया तो उसे एक बुजुर्ग ने ख़्वाब में देखा। पूछा, ''भाई तेरा क्या मामला है?'' उसने कहा, अल्लाह ने मुझसे फ़रमाया कि तूने यह गुनाह किया, यह गुनाह किया, मैं समझा कि अब दोज़ख़ में जाऊँगा। आखिर में अल्लाह तआला ने फ़रमाया, जाओ तुमको माफ़ करता हूँ; इस नेक अमल पर कि तुमने मेरी बन्दी की एक ख़ता माफ़ की थी और उसको डंडा नहीं मारा। उसको गाली नहीं दी, जिस दिन मेरी बन्दी से नमक तेज़ हो गया था तो तुमने उसकी ख़ता को माफ़ कर दिया था, उसके बदले में आज मैं तुमको माफ़ करता हूँ।

जितना ज़्यादा तहज्जुद पढ़नेवाले और ज़्यादा ज़िक्र करनेवाले हैं मेरा तजुर्बा है कि अगर अहलुल्लाह के सोहबतयाफ़्ता न हों तो अकसर उनमें गुस्सा पैदा हो जाता है। वह कहते हैं कि मुझ पर ज़िक्र का जलाल चढ़ा हुआ है। अरे मेरे भाई तुझ पर तो शैतान का वबाल चढ़ा हुआ है। ज़िक्र से तो ख़ुदा की मख्लूक़ पर और मेहरबान होना चाहिए, मगर तू इतना गर्म हो गया कि अपने को हर वक़्त फ़रिश्ता समझता है। अपनी बेटी को कोई सताए तो फ़ौरन आमिलों के पास जाएंगे कि हुज़ूर तावीज़ दे दें कि मेरी बेटी को मेरा दामाद सता रहा है, और खुद अपनी बीवियों को डंडे लगाते हैं और गालियाँ सुनाते है। मख्लूक़ ख़ुदा को जो सताएगा, हरगिज़ अल्लाह का वली नहीं हो सकता। एक लाख हज व उमरा कर ले, एक लाख ज़िक्र कर ले, लेकिन जो अल्लाह की मख्लूक़ को सताएगा, हरगिज़ वह मोमिने कामिल नहीं हो सकता।

''कामिलतरीन मोमिन वह है जो बेहतरीन अख़्लाक़वाला है।'' (मिश्कात, पे० २८२)

हज़रत डॉक्टर अब्दुल हई साहब रह० ने मुझे ख़ुद यह वाक़िआ सुनाया कि बड़ी पीरानी साहिबा ने हज़रत से कहा कि मौलाना ज़रा रिश्तेदारी में जा रही हूँ। ये मुर्गियाँ जो हमने पाली हैं, आठ बजे दिन में इनको दड़बे से निकाल देना और दाना-पानी दे देना। अब इतना बड़ा मुजद्दिदे ज़माना हकीमुल उम्मत जो रोज़ाना साठ ख़तों का जवाब लिखे और पंद्रह सौ किताबें लिखनेवाला उसको भला मुर्गियां कहाँ याद रहें? हज़रत भूल गए, मुर्गियाँ दड़बे में बंद रहीं। अब ख़तों का जवाब नदारद, तफ़्सीर बयानुल कुरआन के लिए क़लम उठाया, सारे उलूम ख़त्म। कुछ समझ में नहीं आ रहा है। दिल में अंधेरा आ गया, सारे उलूम व मआरिफ़ ग़ायब हो गए। हज़रत रह० सज्दे में गिर कर रोने लगे कि या अल्लाह मुझसे क्या खता हो गई? क्या गुनाह है कि जिससे आज तेरी निगाहे करम मेरे दिल पर से हट गई और मेरे दिल से सारे उलूम गायब हो गए? मैं तो आज दिल को बिल्कुल ख़ाली पा रहा हूँ। आसमान से ज़ोर से आवाज़ आई कि अशरफ़ अली! मेरी मख्लूक, मुर्गियाँ दड़बे में बंद हैं। आज वे अंदर-अंदर कुढ़ रही हैं। मेरी मख्लूक़ को सताकर उलूम व मआरिफ़ का इंतिज़ार करते हो! जाओ जल्दी मुर्गियों को खोलो। हज़रत रह० काँप गए, भागे हुए गए, मुर्गियों को खोला और दाना-पानी रख दिया। जब वापस आए तो दिल में फ़ौरन सारे उलूम का दरिया बहने लगा। एक जानवर पर जुल्म का तो यह अज़ाब है, और हमारा क्या हाल है? सगा भाई सगे भाई को सता रहा है, शौहर बीवी को सता रहा है, माँ बाप से लड़ाई, मुहल्ले में पड़ोसियों को सताया जा रहा है; ज़रा-ज़रा-सी बात पर डंडा चल रहा है। क्या हाल है इस वक़्त?

****

कैरेक्टर मालूम करने के दो तरीके

हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने एक शख़्स ने किसी तीसरे शख्स का तज़्किरा करते हुये कहा कि हज़रत! वह तो बड़ा अच्छा आदमी है, हज़रत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि तुम जो यह कह रहे हो कि फलां शख्स बड़े अच्छे अख़्लाक़ और किर्दार का आदमी है, अच्छा बताओ कि क्या कभी तुम्हारा उसके साथ लेन देन का मामला पेश आया? उसने जवाब दिया कि नहीं, लेन देन का मामला तो कभी पेश नहीं आया, फिर आपने पूछा कि अच्छा यह बताओ कि क्या तुमने कभी उसके साथ सफर किया? उसने कहा नहीं, मैंने कभी उसके साथ सफ़र तो नहीं किया, आपने फ़रमाया कि फिर तुम्हें क्या मालूम कि वह अख़्लाक व किर्दार के एतिबार से कैसा अदमी है, इसलिये कि अख़्लाक़ व किर्दार का अन्दाज़ा उस वक़्त होता है, जब इन्सान उसके साथ लेन देन करे, और वह उसमें खरा साबित हो, तब मालूम होता है कि उसका किरदार अच्छा है, और उसके अख़्लाक़ मालूम करने का दूसरा रास्ता यह है कि उसके साथ सफ़र करे। इसलिये कि सफ़र के अन्दर इन्सान अच्छी तरह खुल कर सामने आ जाता है, उसके अख़्लाक़, उसका किर्दार, उसके हालात, उसके जज़्बात, उसके ख्यालात, ये सारी चीजें सफ़र में ज़ाहिर हो जाती है। इसलिये अगर तुमने उसके साथ कोई लेन देन का मामला किया होता, या उसके साथ सफ़र किया होता, तब तो बेशक यह कहना दुरुस्त होता कि वह अच्छा आदमी है, लेकिन जब तुमने उसके साथ न मामला किया, न उसके साथ सफर किया तो इसका मतलब यह है कि तुम उसको जानते नहीं हो, और जब तुम जानते नहीं तो फिर ख़ामोश रहो, न बुरा कहो और न अच्छा कहो। और अगर कोई शख्स उसके बारे में पूछे तो तुम उस हद तक बता दो, जितना तुम्हें मालूम है, जैसे यह कह दो कि भाई! मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुये तो मैंने देखा है, बाकी आगे के हालात मुझे मालूम नही। ***

औरतों की नमाज और जरूरी अहकाम व मसाइल

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नमाज दीने इस्लाम का अहम रूक्न है। कलिमा पढने के बाद हर बालिग मर्द और औरत पर रोजाना दिन–रात में पांच नमाजें फर्ज है।

पाकी

नमाज पढने के लिए बदन का (हैज व निफास वगैरह से) पाक होना जरुरी है और बदन की पाकी के लिए पानी का पाक होना भी जरूरी है, मगर दोनों के मसाइल बहुत ज्यादा है, जिनकी इस छोटी–सी किताब में गुंजाइश नही इनको बडी किताबों में देखिए। नमाज पढने के लिए बदन का पाक होना जरूरी है। अगर नहाने की जरूरत न हो, तो सिर्फ वुजू कर लीजिए। वुजू में चार चीजें फर्ज है :

१) पूरा चेहरा धोना
२) कुहनियों से ऊपर तक दोनों हाथ धोना
३)सर के चौथाई हिस्से का मसह करना
४) टखनों से ऊपर तक दोनों पांवो को धोना

चेहरा, हाथ और पांव, जहां से जहां तक धोना फर्ज है, अगर एक बाल बराबर भी सूखा रह गया तो वुजू नही होगा और नमाज भी नही होगी। इसी तरह अगर चौथाई सर से भी कम का मसाह किया, तो भी वुजू नही होगा।



सुन्नत के मुताबिक वुजू का तरीका

वुजू करते वक्त बिस्मिल्लाह कहिए। पहले तीन बार दोनों हाथ पहुंचो तक धोइए, मिस्वाक वगैरह से दांत साफ कीजिए, मिस्वाक न हो तो दाएं हाथ की उंगली से दांत मलिए, फिर तीन बार कुल्ली कीजिए, इसके बाद तीन बार नाक में पानी डाल कर नाक साफ कीजिए। फिर तीन बार चेहरा सर के बालों से लेकर ठोडी के नीचे तक और एक कनपटी से दूसरी कनपटी तक धोइए। इसके बाद तीन बार पहले दाहिना, फिर बायां हाथ कुहनियों समेत धोइए। अगर हाथ में अंगूठी या चूडी हो या नाक में कील हो, तो उसे हिला कर अन्दर पानी पहुंचाइए, फिर एक बार पूरे सर का मसाह कीजिए, यानी भीगा हाथ पूरे सर पर पेशानी के बालों से गरदन के बालों तक फेरिए और हाथ को पीछे से आगे तक लौटा लीजिए और कानों और गरदन पर मसाह कर लीजिए। इसके बाद तीन बार पहले दायां, फिर तीन बार बायां पांव टखनों से ऊपर तक धोइए और हाथ की उंगलियों से पांव की उंगलियों का खिलाल कर लीजिए की कही सूखा न रह जाए। इसके बाद यह दुआ पढिए–

अल्लहुम्मज–अलनी मिनत्तव्वा बी–न वज–अलनी मिनल मु–त–तहहिरीन.

तर्जुमा– ऐ अल्लाह ! मुझे तौबा और खूब पाकी नसीब कर।

अगर सूरःइन्ना अन्जलना याद हो तो वह भी पढ लीजिए। अगर नाखुन में आटा लग कर सूख गया हो तो पहले उसको छुडा लीजिए। अगर नाखुन पर नेल पालिश का रंग लगा हुआ हो, तो उसको भी साफ कर लीजिए, क्योंकि उसके नीचे पानी नहीं पहुंचेगा, तो न वुजू होगा , न नमाज होगी। इन जैसी चीजों को चाकू वगैरह से साफ करना होगा, जब

जाकर दुजू दुरूस्त होगा। अगर बदन पाक करने के लिए नहाने की – जरूरत हो, तो पहले गुस्ल कर लेना चाहिए।

गुस्ल में तीन चीजें फर्ज है, अगर एक चीज भी छुट जाएगी तो गुस्ल नही होगा और नापाकी दूर नही होगी। वे तीन फर्ज ये है

१) इस तरह कुल्ली करना कि पानी हलक तक पहुंच जाए।

२)नाक में इस तरह पानी डालना कि नरम हड्डी तक पहुंच जाए।

३) सारे बदन पर इस तरह पानी डालना कि एक बाल बराबर भी कोई जगह सूखी न रहे।

सुन्नत के मुताबिक गुस्ल का तरीका

पहले दोनों हाथ गट्टो तक धो लीजिए, इस्तिंजा कीजिए और जहां पर भी नापाकी लगी हुई हो, उस जगह को धो लीजए, फिर वुजू कीजिए। वुजू के बाद एक बार सर पर पानी डालिए और सारे बदन पर अच्छी तरह हाथ फेरिए कि हर जगह अच्छी तरह पानी पहुंच जाए। फिर दो बार और सर पर पानी इस तरह डालिए कि सारे बदन पर पानी बह जाए। अगर नाक मे कील, कान में बाली या एयरिंग हो तो हिला लीजिए की उन सुराखों में भी पानी पहुंच जाए। अगर पानी नही पहुंचा तो गुस्ल न होगा।

नमाज पढने के लिए और जरूरी चीजें

नमाज शुरू करने से पहले ये चीजें जरूरी है, इनके बगैर नमाज नही होगी।

१) बदन पाक हो। बदन की पाकी के लिए गुस्ल और वुजू का तरीका बताया जा चुका है।

२) बदन के कपडे पाक हों। कुछ औरतें बच्चों के पेशाब पाखाना की वजह से कपड़ों की नापाकी का बहाना करके नमाज ही छोड बैठती है। यह मजबूरी कोई मजबूरी नहीं है। नमाज के लिए दूसरा कपडा रखना चाहिए और नमाज पढते वक्त पाक कपडे बदल कर नमाज पढे।

३) जिस जगह या जिस कपडे पर नमाज पढी जाए वह जगह या कपडा पाक हो।

४) सारा बदन कपडे से छूपा हुआ हो। सिर्फ चेहरा, गट्टो तक हाथ और टखनों तक पांव खुले रखने की इजाजत है, लेकिन एहतियात इसमें है कि चेहरे के सिवा हाथ–पांव भी नमाज की हालत में छुपे रहें। कपडा इतना बारीक न हो कि अन्दर से बदन का कोई हिस्सा या सर के बालों का कोई हिस्सा झलकता हो, ऐसे कपडे में नमाज नही होती है।

नोट– अगर नमाज की हालत में चेहरे, गट्टे और टखने के सिवा किसी अजब (अंग) का चौथाई हिस्सा इतनी देर तक खुला रह गया, जितनी देर में तीन बार सुब्हानल्लाह कहा जा सकता है, तो नमाज टूट जाएगी, फिर से नमाज शुरू करनी होगी। हां अगर इतनी देर तक खुला नही रहा, बल्कि खुलते ही फौरन छुपा लिया तो नमाज हो जाएगी। जैसे, पिंडली, बाहकलाई, सर, सर के बाल, कान या गरदन, किसी अज्व (अंग) का चौथाई हिस्सा इतनी देर खुला रह जाए तो नमाज नही होगी।

पांच वक्त की नमाजें

फज्र की नमाज–पहले दो रकअत सुन्नत, इसके बाद तो रकअत फर्ज।

जुहर की नमाज–पहले चार रकअत सुन्नत, फिर चार रकअत फर्ज, इसके बाद दो रकअत सुन्नत और खुदा तौफीक दे तो दो रकअत नफ्ल।

अस्र की नमाज– पहले चार रकअत सुन्नत, इसके बाद चार रकअत फर्ज।

मगरिब की नमाज–पहले तीन रकअत फर्ज, इसके बाद दो सुन्नत फिर दो रकअत नफ्ल।

इशा की नमाज– पहले चार रकअत सुन्नत, फिर चार रकअत फर्ज फिर दो रकअत सुन्नत फिर दो रकअत नफ्ल इसके बाद तीन रकअत वित्र वाजिब, फिर दो रकअत नफ्ल।

नोट–अस्र और इशा के फर्ज से पहले चार रकअत सुन्नत की ताकीद नहीं है। अगर कोई पढ ले तो बडा सवाब मिलेगा और न पढे तो कुछ गुनाह भी नही है। इसी तरह मगरिब और इशा में नफ्ल अगर कोई न पढे तो कोई हरज और गुनाह नही होगा और पढले तो बडा सवाब मिलेगा।

अलबत्ता रमजान शरीफ के महीने में इशा के

फर्ज और सुन्नत के बाद तरावीह की नमाज भी सुन्नत है और इसकी बडी ताकीद है, इसको छोड देना और न पढना गुनाह है। नमाजें वित्र तरावीह के बाद पढी जाती है।

नफिल नमाजे

इन पांच नमाजों के अलावा और वक्तों में भी नफ्ल नमाज का बडा सवाब है। नफ्ल नमाज दो–दो रकअत की नीयत करके पढना चाहिए। इशराक की नमाज– सुबह को जब सूरज अच्छी तरह निकल आए तो चार रकअत पढी जाती है। चाश्त की नमाज– नौ दस बजे दिन के आठ रकअत पढी जाती है।अव्वाबीन की नमाज– मगरिब की नमाज के बाद कम से कम छः रकअत पढी जाती है।तहज्जुद की नमाज– आधी रात के बाद से लेकर सुबह से पहले–पहले तक जिस वक्त नींद टूट जाए, चार, छः या आठ रकअत पढी जाती है।

इन वक्तो में कोई नमाज न पढी जाए

१)सुरज निकलते वक्त। २)सुरज डूबते वक्त, हां उस दिन की फर्ज नमाजें अस्र कजा हो रही हो तो सूरज डूबते वक्त भी पढी जा सकती है।३)ठीक दोपहर के वक्त, जब कि सूरज बीच सर पर हो।

इन तीन वक्तों में सज्द–ए–तिलावत भी मना है।

४)फज्र की नमाज पढ लेने के बाद जब तक सूरज अच्छी तरह निकल न आए।५)अस्र और रमगरिब की नमाजों के बीच में आखीर के दोनों वक्त में कोई नफिल जायज नही है। हां फर्ज नमाजों की कजा पढी जा सकती है और सजद–ए–तिलावत भी दुरूस्त है। ✻✻✻✻

इल्म और इल्म की मजलिस

अल्लाह के प्यारे रसूल ने एक बार अपने जांनिसारों से फरमाया : जब तुम जन्नत के बागों के पास से गुज़रा करो तो कुछ चुन लिया करो। सहाबा ने अर्ज किया– या रसूलल्लाह ! जन्नत के बाग़ क्या हैं ? आक़ा ने फरमाया : इल्म की मजलिसे, गोया इल्म की महफिलें, मजलिसे, दर्सगाहैं जन्नती बाग़ हैं, वहां बैठने, इल्म हासिल करने वाले लोग भी जन्नती है। अगर कोई आदमी किसी ऐसी जगह से होकर गुजरे जहां दीन की बातें हो रही हों या सिखाई–बताई जा रही हों तो उसे वहां बैठकर सीखना चाहिए। अगर मौका न हो तो कम से कम दो–एक बात ही सीखकर आगे निकल जाना चाहिए। इल्म की इसी फजीलत को बयान करते हुए लुकमान ने अपने बेटे को इस तरह, नसीहत की – आलिमों की खिदमत में जरूर बैठना, दानिशवरों की बातों को गौर से सुनना क्योंकि उनकी बातों से मुर्दा दिल इस तरह जिन्दा हो जाते हैं जैसे बारिश से बंजर जमीन हरी–भरी हो जाती है। आलिमों की सोहबत (संगत) की अहमियत को उजागर करते हुए एक सहाबी के सवाल पर अल्लाह के रसूल ने फरमाया – तुम्हें ऐसे लोगों के पास बैठना चाहिए जिन्हें देखकर खुदा याद आए। जिनकी बातों से इल्म बड़े और जिनके अमल से आखिरत की याद आए । इल्म की मजलिसें बड़ी मुबारक होती हैं । जहां चन्द लोग जमा होकर अल्लाह–रसूल की बातें करते हैं वहां अल्लाह की रहमत नाज़िल होती हैं । अल्लाह के रसूल फरमाते हैं –जब लोग किसी मजलिस में बैठकर अल्लाह का जिक्र करते हैं तो फरिश्ते उस मजलिस को घेर लेते हैं, खुदा की रहमत उन्हें ढांप लेती है, अल्लाह पाक फरिश्तों की मजलिस में उनकी तारीफ बयान फरमाता है। एक दूसरी हदीस में ऐसे लोगों के लिए फरमाया गया – अल्लाह ने तुम्हें बख्श दिया और तुम्हारे गुनाहों को नेकियों से बदल दिया। इसी तरह जिस मजलिस में अल्लाह को याद नहीं किया जाता,उसके रसूल पर दुरुद नहीं भेजा जाता उस मजलिस वालों को क़यामत में बड़ा अफसोस होगा (कि अफसोस, हम अल्लाह व रसूल को भुलाकर बहुत बड़े सवाब से महरूम रहे) हज़रत दाऊद हलैहिस्सलाम ने दरबारे इलाही में अर्ज किया–मौला अगर तू मुझे जाकेरीन की मजलिस से गुजर कर गाफ़ेलीन की मजलिस की तरफ जाता देखे तो मेरे पांव तोड़ देना ।

अनुवाद

सुरतूल मुहम्मदिन



अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

१– जिन लोगों ने इन्कार किया, और अल्लाह के रास्ते से रोका, तो 'उसने' उनके कर्म को अकारथ कर दिया;

२– और जो ईमान लाए, और भले काम किये, और उस चीज़ पर ईमान लाए जो मुहम्मद (स्व०)पर उतारा गया और वही हक (सत्य) है उनके 'रब' की ओर से, 'उसने' उनकी बुराइयां उनसे दूर कर दी और उनका हाल ठीक कर दिया;

३– यह इसलिए कि जिन लोगों ने इन्कार किया वे बातिल (असत्य) पर चले, और जो लोग ईमान लाए, वह अपने 'रब' के बताए हुए सही रास्ते पर चले, इस तरह अल्लाह लोगों के लिए उनके हाल बयान करता है;

४– तो जब तुम्हारा मुकाबला काफिरों (इन्कारियों) से हो, तो उनकी गर्दनें उड़ा दो, यहां तक कि जब उन्हें अच्छी तरह कुचल दो, तो (जो बचें) मज़बूती से कैद कर लो, फिर इसके बाद या तो एहसान करो (और छोड़ दो) । या फिदिया (अर्थ–दण्ड) का मामला करो। यहां तक कि वे लड़ाई में अपने हथियार डाल दें, यह है तुम्हारी ज़िम्मेदारी, और अगर अल्लाह चाहे तो खुद ही उनसे निपट ले, लेकिन 'उसने' चाहा कि तुम्हें एक–दूसरे के ज़रिये (लड़वा कर) आज़माए, और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये, तो उनके कामों को अल्लाह हरगिज़ अकारथ नहीं करेगा;

५– 'वह' उनको राह पर लगाएगा और उनका हाल ठीक कर देगा;

६– और उन्हें जन्नत में दाखिल करेगा, जिसका हाल 'उसने' बता रखा है।

७– ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह भी तुम्हारी मदद करेगा, और तुम्हारे कदम जमा देगा।

८ – और जिन लोगों ने इन्कार किया, तो उनके लिए तबाही है, और उनके कामों को अल्लाह अकारथ कर देगा;

९ – यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ को नापसंद किया जिसे अल्लाह ने नाज़िल किया, तो 'उसने' उनके कामों को अकारथ कर दिया।

१०– क्या यह लोग धरती में चले–फिरे नहीं, ताकि देखते कि उनका कैसा अंजाम हुआ जो लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं? अल्लाह ने उन्हें तबाह कर दिया, और काफिरों (इन्कारियों) के लिए ऐसी ही तबाही है;

११– यह इसलिए कि जो लोग ईमान लाए उनका संरक्षक अल्लाह है, और काफिरों का संरक्षक (मददगार) कोई नहीं।

१२– जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये, ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, और जिन लोगों ने इन्कार किया; वे फायदे उठा रहे हैं, और इस तरह खा रहे हैं जिस तरह जानवर खाता है, और उनका ठिकाना आग है।

१३– और कितनी ही बस्तियां थीं, जो ताकत में

तुम्हारी उस बस्ती से, जिसने तुम्हें निकाल दिया, शक्ति में बढ़-चढ़ कर थीं 'हमने' उनको तबाह कर दिया, तो कोई उनका मददगार न हुआ।

१४- तो क्या जो व्यक्ति अपने 'रब' की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हो, वह उन जैसा (हो सकता) है, जिन्हें उन का बुरा कर्म ही सुहाना लगता हो, और वे अपनी इच्छाओं के पीछे ही चलने लग गये हों?

१५- जन्नत (की विशेषता,) जिसका मुत्तकियों से वादा किया गया है, यह है कि उसमें पानी की नहरें बह रही होंगी, जिसमें कोई बदलाव (बदबू) न होगा, और दूध की नहरें जिसका स्वाद (मज़ा) न बदलेगा, और ऐसे पीने (शराब) की नहरें होंगी जो पीने वालों के लिए बड़ी स्वादिष्ट होंगी, और साफ-सुथरे शहद की भी , नहरें होंगी, और उनके लिए हर तरह के फल होंगे,और उनके रब की ओर से मग्फिरत (क्षमा) है, क्या ऐसे लोग उन लोगों की तरह हो सकते हैं? जो हमेशा जहन्नम में रहने वाले हैं, और जिन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, जो उनकी आँतों को टुकड़े-टुकड़े कर के रख देगा।

१६- और उनमें से कुछ ऐसे भी हैं, जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास से निकलते हैं, तो जिन लोगों को इल्म मिला है, उनसे कहते हैं, कि उन्होंने (रसूल से) अभी क्या कहा था? यही वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और यह अपनी इच्छाओं के पीछे चल रहे है।

१७-और जिन लोगों ने सीधी राह अपनाई, 'उसने' उनकी सूझ-बूझ और बढ़ा दी, और उन्हें परहेज़गारी अता फरमायी।

१८- तो क्या अब यह लोग उस घड़ी (कियामत) के इन्तिज़ार में हैं कि उन पर अचानक आ जाए? उसकी निशानियां (तो ज़ाहिर ही हो चुकी हैं) जब वह आ जाएगी तो उस समय उन्हें नसीहत कहाँ (फायदा देगी)?

१९ - तो जान लो! कि 'अल्लाह' के सिवा कोई इलाह(पूज्य)नहीं; और अपनी गल्तियों के लिए मांफी मांगो, और मोमिन मर्दो और औरतों के लिए भी, और अल्लाह तुम्हारे चलने-फिरने को जानता है और तुम्हारे ठिकानों को भी।

२०- और जो लोग ईमान लाए वे कहते हैं, कोई सूरः क्यों नहीं उतरी? लेकिन जब एक पक्की सूरः उतर जाती है, जिसमें किताल (युद्ध) का उल्लेख होता है, तो तुम उन लोगों को देखते हो-जिनके दिलों में रोग है-कि वे तुम्हारी ओर इस तरह देखते हैं, जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छा गई हो, तो अफ़सोस है उन पर!

२१- (उनके लिए बेहतर है) हुक्म मानना, और ठीक बात कहना, फिर जब बात पक्की हो जाए, तो अगर ये अल्लाह के लिए सच्चे साबित होते, तो उनके लिए बहुत अच्छा होता।

२२- (ऐ मुनाफिको!) तुम से अजब नहीं कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो धरती में बिगाड़ पैदा करो और अपने रिश्तों-नातों को तोड़ने लगो।

२३- यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, और उन्हें बहरा और (उनकी) आँखों का अन्था कर दिया;

२४- तो क्या ये कुरआन में सोच-विचार नहीं करते, उनके दिलों पर ताले लगे हैं?

२५- वे लोग जो पीठ फेर कर पलट गये, इसके बाद कि उन पर सीधी राह स्पष्ट हो चुकी थी,उन्हें शैतान ने सजा कर दिखाया और उसने उन्हें लम्बी उम्र का वादा दिया।

२६- यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ को नापसंद किया जो अल्लाह ने उतारा, कहा, हम कुछ मामलों में तुम्हारी बात मान लेंगे, अल्लाह उनकी छिपी बातों को जानता है।

२७- तो उस वक़्त क्या (हाल) होगा जब फरिश्ते उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते हुए उनकी रूहें कब्ज़ करेंगे,

२८- यह इसलिए कि यह उस पर चले जो अल्लाह को नाराज़ करने वाला था, और उन्होंने 'उसकी खुशी को नापसंद किया, तो 'उसने उनके सारे काम अकारथ कर दिये।

२९- क्या उन लोगों ने जिनके दिलों में रोग है यह समझ रखा है कि अल्लाह उनके कीनों (कपट) को, जाहिर नहीं करेगा। (बाकी आईंदा)

अच्छे रिश्ते

नाम : आकीब जैनुद्दीन मुल्ला

जन्मतारीख: २८/०६/१९९९

उंची: ५ फूट ८ इंच

पढाई: आय.टी.आय, मेकॅनिकल इंजिनियर

काम: मेकॅनिकल इंजिनियर इन फर्ग्युसन
मेस्सी,कराड

रंग: गेहुआँ

बाप का नाम: जैनुद्दीन दिलावर मुल्ला

काम: फोरव्हिलर वर्कशॉप

माँ का नाम: शाहीन मुल्ला (इंग्लिश प्रोफेसर,बार्टी)

बहन: नहीं

भाई: १ (साकीब जैनुद्दीन मुल्ला)

घर का पता: अयोध्या हॉटेल के पिछे, शास्त्रीनगर,
पी.बी. रोड, मलकापूर, कराड,
जि.सातारा

मो: ७८४१९३७३९७
९८८१२२१३८६
८८५५९०१३८६

रिश्तेदार: मुल्ला, मुलाणी, सय्यद, मुजावर, काझी,
शेख, देसाई, पठाण,

नाम : नाजमीन शरफुद्दीन भालदार

जन्मतारीख : १३/०५/१९९१

उंची : ५ फूट ६ इंच

रंग : गोरा

एज्युकेशन : बी. एस्सी- बायोटेक,
एम.बी.ए -एच आर
ॲन्ड मार्केटींग

नोकरी : एक्झीकेटीव एच.आर.
इन ॲन्सेस्टर हिंजेवाडी,पुणे

बाप का नाम : शरफुद्दीन निजाम भालदार(बिजनेस)

माँ का नाम : शहनाज शरफुद्दीन भालदार

भाई का नाम : साहिल शरफुद्दीन भालदार

घर का पता : फ्लॅट नं २, बिल्डींग नं २,
निलरत्न सोसायटी,
पी.एन.गाडगीळ के सामने,
चिंचवड, पुणे

जन्मस्थान: माधवपूरवाडी, ता. कोरेगाव,
जि. सातारा

रिश्तेदार: काझी, सय्यद, इनामदार, पटेल, खान,
मुल्ला, मुजावर, शेख, पठाण

मो: ९८२२२५४३६६
जरूरीयात: लडका पढा लिखा होना चाहिए।

(5)**नाम** : हाफिजा आरीफ मुल्ला

जन्मतारीख : २६/०८/२००२

उंची : ५ फूट २ इंच

रंग : गोरा

पढाई : बारावी उर्दू

बाप का नाम : आरीफ सिकंदर मुल्ला

बाप का कारोबार : स्क्रॅप मर्चंट

भाई : एक (छोटा)

बहन : दो

जात : मुस्लिम

पता : आप्पासो पाटील नगर, १०० फुटी रोड,
अबु सईद मस्जिद के पास, सांगली

मो : ९३७१५७०७४०

लडका पढा लिखा होना चाहिए, खुद का घर होना चाहिए, बी.ई, बी. फार्मसी, ग्रॅज्युएट , खेती होना चाहिए ।

नाम : आसमा जहांगीर मकानदार

जन्मतारीख: १४/०६/१९९६

उंची: ५ फूट १ इंच

पढाई: बी.ई (इ.एन.टी.सी),गेट ॲपिअर्ड

बाप का नाम: जहांगीर जानुद्दीन मकानदार

काम: सिनियर क्लर्क इन आरग हायस्कूल

माँ का नाम: दिलशाद जहांगीर मकानदार

बहन: २ (शादीशुदा)मिरज मुश्रीफ

भाई: २(पढाई)

घर का पता: मु.पो. आरग, लक्ष्मीवाडी रोड,
महादेव मंदिर के करीब, ता. मिरज,
जि. सांगली

मो: ९४२११८१०१७
७७७४८४११९४

रिश्तेदार: मकानदार, मुल्ला, मुजावर, मुश्रीफ, किल्लेदार